

इमाम महदी अलैहिस्सलाम हदीसे रसूल की रौशनी में

लेखक: आयतुल्लाह सादिक शीराज़ी

अलहसनैन इस्लामी नैटवर्क

बिलस्मिल्ला हिरहमा निर्हीम

मुकद्दमा

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का नामे नामी तमाम आसमानी किताबों तौरैत, ज़बूर, इन्जील में मौजूद है।

कुरआने करीम की कई आयात में आपके बारे में तफ़सीर व तावील की गई है।

पैगम्बरे इस्लाम (स.) की ज़बाने मुबारक से मक्के, मदीने में, मेराज के मौक़े पर और दूसरी मुनासेबतों पर तमाम ही आइम्मा-ए मासूमीन के बारे मुखतलिफ़ हदीसे जारी हुई हैं।

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने भी अपने बेटे महदी का ज़िक्र किया और हज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा ने भी इमाम महदी का तज़केरा फ़रमाया है। इसी तरह हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन हज़रत इमाम सज्जाद हज़रतिमाम बाक़िर हज़रत इमाम सादिक़ हज़रत इमाम रिज़ा हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी हज़रत इमाम अली नक़ी व हज़रत इमाम हसन अस्करी अलैहिमु अस्सलाम ने भी अपने बेटे इमाम महदी का ज़िक्र किया है।

पैग़म्बरे इस्लाम (स.) के असहाब में से अबू बकर, उमर, उस्मान, अब्दुल्लाह इब्ने उमर, अबू हरैरा, समरा बिन जुन्दब, सलमान, अबुज़र, अम्मार और इनके अलावा भी बहुत से असहाब ने हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का ज़िक्र किया है।

पैगम्बरे इस्लाम (स.) की बीवियों में से आइशा, हफ़सा, उम्मे सलमा और कई दूसरी बीवियों ने हज़रत इमाम महदी का ज़िक्र किया है।

ताबेईन में औन बिन हुजैफ़ा, इबादियः बिन रबी और कुतादा जैसे अफ़राद ने इमाम महदी अलैहिस्सलाम का ज़िक्र किया है।

ख़ुदावन्दे आलम महदी (अ.) के ज़रिये दीन कामिल फ़रमायेगा।

बयान उल कंजी(शाफ़ेई) में अली बिन जोशब से रिवायत की है, अली बिन जोशब बयान करता है अली इब्ने अबी तालिब फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलल्लाह (स.) से सवाल किया कि क्या आले मुहम्मद के महदी हम में से हैं या हमारे अलावा हैं? हज़रत ने फ़रमाया: ऐसा नहीं है, बल्कि ख़ुदावन्दे आलम हम अहले बैत के सबब दीन (इस्लाम) को इख़तेताम तक पहुँचायेगा। जिस तरह उसने हमारे ही नबी (स.) के ज़रिये उसको कामयाब बनाया है और हमारे ही ज़रिये लोग फ़ितने से

महफूज़ रहेगें। जिस तरह वह शिर्क से महफूज़ रहे और हमारी ही मुहब्बत के सबब अदावत के बाद उनके दिलों में मेल मुहब्बत और भाईचारगी पैदा कर देगा। जिस तरह वह शिर्क की अदावत के बाद एक दूसरे के भाई करार पाये।

मुन्तख़ब कन्ज़ुल उम्माल: रसूलल्लाह (स.) ने फ़रमाया: अगर दुनिया में सिर्फ़ एक रोज़ बाक़ी रह जायेगा तो ख़ुदा वंदे आलम उस रोज़ को इतना तूलानी कर देगा कि मेरे अहले बैत से एक शख्स कुस्तुन्तुन्या और दैलम के पहाड़ों का हाकिम करार पायेगा।[७][७]

हाफ़िज़ अलक़न्दुज़ी अलहनफ़ी अबू सईद ख़िदरी से बतौरै मरफ़ूअ रिवायत करते हैं, हुज़ूर (स.) में फ़रमाया: महदी हम अहले बैत में से हैं और बलंद सर का हामिल है। वह ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से इस तरह भर देगा, जिस तरह वह पहले जुल्म व ज़ौर से भरी होगी।

अलफुसूलुल मुहिम्मा अल्लामा मालिकी बिन सबाग में अबू दाऊद और तिरमीज़ी अपनी सुनन में अब्दुल्लाह बिन मसऊद से (बतौरै मरफूअ) रिवायत करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद बयान करते हैं कि रसूलल्लाह (स.) ने फ़रमाया: अगर दुनिया से एक रोज़ भी बाक़ी रह जायेगा तो खुदावन्दे आलम उस रोज़ को इतना तूलानी कर देगा कि मेरे अहले बैत से एक शख़्स ज़ाहिर होगा, जिसका नाम मेरे नाम पर होगा। जो ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से इस तरह से भर देगा जिस तरह वह जुल्म व जौर से भर चुकी होगी।

अलकंजी (शाफ़ेई) अबूसईद ख़िदरी से रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह (स.) ने फ़रमाया: आख़री ज़माने में फ़ितनों का ज़हूर होगा। (जिसके दरमियान) महदी (अ.) नामी एक शख़्स ज़ाहिर होगा जिसकी अता व बख़िशिश मुबारक होगी।

यनाबी उल मवद्दत में इब्ने अब्बास से रिवायत की गई है कि इब्ने अब्बास बयान करते हैं कि रसूलल्लाह (स.) ने फ़रमाया: इस दीन की कामयाबी अली (अ.) से हुई। अली (अ.) की शहादत के बाद दीन में फ़साद बरपा होगा, जिसकी इस्लाह फ़क़त महदी (अ.) के ज़रिये होगी।

यनाबी उल मवददत में अली इब्ने अबी तालिब से रिवायत की गई है कि हज़रत ने फ़रमाया: दुनिया ख़त्म न होगी यहा तक कि मेरी उम्मत से एक शख़्स हुसैन (अ.) के फ़रज़न्द से ज़ाहिर होगा और ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से भर देगा, जिस तरह वह जुल्म व जौर से भर चुकी होगी।

हाशिया: हदीस शरीफ़ में बयान हुआ है कि इस दुनिया की कामयाबी अली इब्ने अबी तालिब (अ.) के सबब हुई। मौजूदा हदीस में रसूलल्लाह (स.) ने उन कलेमात की तरफ़ इशारा फ़रमाया जो आपने अली इब्ने अबी तालिब की फ़ज़ीलत में इब्तेदाए इस्लाम में इरशाद फ़रमाये थे। मसलन:

रसूलल्लाह (स.) ने फ़रमाया: इस्लाम अली बिन अबी तालिब की तलवार और खदीजा के माल से कामयाब हुआ।

खंदक के रोज़ अली की ज़रबत दोनों जहान की इबादत से अफ़ज़ल है।

मैं और अली इस उम्मत के बाप हैं।

जिस वक़्त अली इब्ने अबी तालिब अम्र इब्ने अब्दे वुद से जंग करने के लिए निकले तो रसूलल्लाह (स.) ने फरमाया: कुल्ले ईमान कुल्ले कुफ़्र के मुक़ाबले में जा रहा है।

हुज़ूर ने जंगे खंदक़ के वक़्त दुआ करते हुए खुदावन्दे आलम के हुज़ूर में इस तरह अर्ज़ किया, परवरदिगार !अगर तू चाहता है कि तेरी इबादत न की जाये तो फिर तेरी इबादत कभी न होगी। (मुअल्लिफ़)

यनाबी उल मवददत में अली इब्ने अबी तालिब से रिवायत की गई है कि हज़रत ने फ़रमाया: दुनिया खत्म न होगी यहाँ तक कि मेरी उम्मत से एक शख्स हुसैन के फ़रज़न्द से ज़ाहिर होगा और ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से भर देगा जिस तरह से वह जुल्म व जौर से भरी होगी।

यनाबी उल मवददत में हुज़ैफ़ा बिन यमान से रिवायत की गई है कि हुज़ैफ़ा बयान करते हैं कि हमसे रसूलल्लाह (स.) ने खिताब करते हुए क़ियामत तक होने

वाले हालात की खबर दी और इस तरह इरशाद फ़रमाया: अगर दुनिया से सिर्फ़ एक रोज़ बाकी रह जायेगा तो भी खुदावन्दे आलम उस रोज़ को इतना तूलानी कर देगा कि उसमे मेरी औलाद से एक शख्स को मबऊस फ़रमायेगा, जिसका नाम मेरे नाम पर होगा। सलमान ने अर्ज की, या रसूलल्लाह ! आप का वह कौन सा फ़रज़न्द होगा ? हुज़ूर ने इमाम हुसैन की जानिब इशारा करते हुए फ़रमाया: मेरा वह फ़रज़न्द इसकी औलाद से होगा।

यनाबी उल मवद्दत में कुरैतुज़ ज़नी के वास्ते से रसूलल्लाह (स.) से रिवायत की गई है कि हुज़ूर ने फ़रमाया: जिस वक़्त ज़मीन जुल्म व जौर से भर जायेगी तो मेरे अहलेबैत से एक शख्स ज़ाहिर होगा और वह ज़मीन को अदल व इंसाफ़ सेइस तरह भर देगा जिस तरह वह जुल्म व जौर से भर चुकी होगी।

यनाबी उल मवद्दत में पैगम्बरे इस्लाम (स.) से रिवायत की गई है कि हुज़ूर (स.) ने अली इब्ने अबी तालिब (अ.) से फ़रमाया: ऐ अली! लोगों के हसद से परहेज़ करना जो मेरी वफ़ात के बाद ज़ाहिर होगा। ऐसे लोगों पर खुदावन्दे आलम लानत करता है और लानत करने वाले लानत करते हैं। (इसके बाद रोते हुए

फ़रमाया) मुझे जिबरईल ने ख़बर दी है कि यह लोग अली पर मेरे बाद जुल्म करेगें और यह जुल्म काइम के ज़हूर होने तक बाक़ी रहेगा। उन लोगों की मक्कारी व अय्यारी ऊरूज पर होगी और उम्मत उन की मुहब्बत पर जमा न होगी। उनकी शान कम होगी उनका इंकार करने वाला ज़लील होगा। उनकी तारीफ़ व मदह करने वालों की कसरत होगी और यह उस वक़्त होगा जब शहर मुतगय्यर हो जायेगें। बंदे कमज़ोर हो जायेगें और नाउम्मीदी बढ़ जायेगी। उस वक़्त मेरी औलाद से कायम अल महदी (अ.) ज़हूर करेगा। खुदावन्दे आलम उनकी तलवार के ज़रिये हक़ को ज़ाहिर फ़रमायेगा और लोग उसकी रग़बत और ख़ौफ़ से पैरवी करेगें। फिर हज़रत (अ.) ने फ़रमाया:

"ऐ लोगो, मैं तुमको बशारत देता हूँ, खुदा का वादा हक़ है। वह अपने वादे के खिलाफ़ हरगिज़ नहीं करता और उसका फ़ैसला कभी तबदील नहीं होता क्योंकि वह हकीम व ख़बीर है। यकीनन अल्लाह की तरफ़ से कामयाबी करीब है। परवरदिगार यह मेरे अहलेबैत हैं इन से हर तरह की कसाफ़त को दूर फ़रमा और उनकी नुसरत फ़रमा और उनको इज़ज़त अता कर ज़िल्लत से महफूज़ रख और मुझे उनके दरमियान बाक़ी रख इसलिए कि तू जो करना चाहता है उस पर कुदरत रखता है।"

इब्ने असाकर की तारीखे दमिश्क में इब्ने अब्बास की रिवायत है कि रसूलल्लाह (स.) ने फ़रमाया: वह उम्मत किस तरह हलाक हो सकती है, जिसकी इब्तेदा में मैं और आखिर में ईसा और दरमियान में महदी हों।

हाशिया: मज़क़ूरा हदीस में रसूलल्लाह (स.) ने इरशाद फ़रमाया: ईसा उम्मत के आखिर में होंगे। मुमकिन है हदीस का मतलब यह हो कि चूँकि हज़रत ईसा (अ.) महदी (अ.) के ज़हूर के बाद आसमान से नाज़िल होंगे, पस इस तरह ईसा (अ.) महदी (अ.) से बाद में होंगे। लिहाज़ा यह कहना सही है कि अक्वल रसूलल्लाह (स.) (स.) हैं और वसत में महदी (अ.) और आखिर में ईसा (अ.) हैं।

सुनने निसाई में पैग़म्बरे इस्लाम (स.) से रिवायत की गई है कि हुज़ूर ने फ़रमाया वह उम्मत कैसे हलाक हो सकती है जिसके अक्वल में मैं हूँ, दरमियान में महदी (अ.) और आखिरी में ईसा (अ.) हैं।

यनाबी उल मवद्दत में अबू सईद खिदरी से रिवायत की गई है कि वह बयान करते हैं मैं फ़ातिमा (अ.) की खिदमत में उस वक़्त हाज़िर हुआ, जबकि पैग़म्बरे इस्लाम (स.) बीमार थे। शहज़ादी ने रोते हुए अर्ज़ किया बाबा जान मैं आपके बाद ज़ाहिर होने वाले हालात से डरती हूँ। हुज़ूर (स.) ने इरशाद फ़रमाया: ऐ फ़ातिमा ! खुदावन्दे आलम ज़मीन वालों पर नज़र की तो उसने तुम्हारे बाप को मुन्तख़ब किया और रसूल बनाया, फिर दूसरी मर्तबा नज़र की तो उसने तुम्हारे शौहर को मुन्तख़ब किया और मुझे हुक्म दिया कि मैं तुम्हारी शादी अली से कर दूँ, इस पर मैंने तुम्हारी शादी अली से की, जो मुसलमानों के दरमियान हिल्म के एतेबार से बुजुर्ग हैं, इल्म में सबसे ज़्यादा हैं और इस्लाम में सबसे मुक़द्दम है। (यहा तक हुज़ूर (स.) ने फ़रमाया) इस उम्मत में मेरे दो नवासे (हसन व हुसैन) तुम्हारे फ़रज़न्द हैं और इस उम्मत में मेरा एक (फ़रज़ंद) महदी (अ.) होगा।

अबू हारूने अबदी कहता है वहब इब्ने मनिया ने बयान किया है कि जब मूसा की आजमाइश इनकी क़ौम के ज़रिये हुई तो उनकी क़ौम ने बछड़े को अपना खुदा करार दिया। यह अम्र मूसा पर बहुत गर्रा गुज़रा। खुदा वन्दे आलम ने फ़रमाया: ऐ मूसा तुम से क़ब्ल जितने भी अम्बिया हुए उन सबकी आजमाइश उनकी क़ौम के

ज़रिये हुई और मुहम्मद (स.) के बाद उनकी क़ौम एक बड़ी आजमाईश में मुब्तला होगी। यहाँ तक कि वह एक दूसरे पर लानत करेंगे। फिर खुदावन्दे आलम उनकी मुहम्मद (स.) की औलाद से एक शख्स से इस्लाह फ़रमायेगा, जिसका नाम महदी होगा।

इब्ने अब्दुल बर अपनी किताब अल इस्तिआब फ़ी असमाइल असहाब में जाबिर सदफ़ी के वास्ते से पैग़म्बरे इस्लाम (स.) से रिवायत करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया: मेरी उम्मत से एक शख्स ज़ाहिर होगा जो ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से भर देगा।

यनाबी उल मवद्दत मवद्दत में अली इब्ने अबी तालिब (अ.) से रिवायत की गई है कि हज़रत ने फ़रमाया अनक़रीब खुदावन्दे आलम ऐसी क़ौम को लायेगा जिन्हे खुदा दोस्त रखता होगा और वह लोग भी खुदा को दोस्त रखते होंगे और खुदा वन्द उनमें से एक ग़रीब अजनबी को हुकुमत अता करेगा, पस वह महदी हैं, जिनका चेहरा सुर्ख और बाल ज़र्द होंगे, वह ज़मीन को बग़ैर किसी मशक्कत के अदल व इंसाफ़ से भर देंगे। वह अपने वालेदैन से बचपने में जुदा हो

जायेगें।(लोगों) के नज़दीक अज़ीज़ होंगें। मुसलमानों के शहरों पर अमन व अमान के साथ हुकुमत करेगें। लोग उनकी बात तवज्जोह से सुनेगें। जवान और बुढ़े इताअत करेगें। वह ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से इस तरह से भर देंगें, जिस तरह वह जुल्म व जौर से भरी होगी। उस वक़्त इमामत कामिल हो जायेगी। महदी की ख़िलाफ़त मुकर्रर हो जायेगी और खुदा लोगों को उनकी क़ब्रों से ज़िन्दा उठायेगा। ज़मीन आबाद हो जायेगी, और नहरें जारी होंगीं, फ़ितना व ग़ारतगरी ख़त्म हो जायेगी और ख़ैर व बरकत में इज़ाफ़ा होगा।

महदी(अ) की बैअत काबे से करीब वाक़े होगी अलकंजी(शाफ़ेई) बरिवायते होज़ैफ़ा बयान करते हैं, आँ हज़रत(स) ने फ़रमाया: अगर दुनिया से सिर्फ़ एक रोज़ भी बाक़ी रह जायेगा खुदावंदे आलम उस दिन में एक शख्स को मबऊस फ़रमायेगा जिसका नाम मेरे नाम पर होगा और अख़लाक़ मेरे अख़लाक़ जैसा होगा लोग उसकी रुक्न व मक़ामे इब्राहीम के दरमियान बैअत करेगें। महदी के ज़रीये खुदावंदे आलम दीन की हक़क़ानीयत को बाक़ी रखेगा और फ़ुतुहात अता करेगा। तमाम रुप ज़मीन पर ला इलाहा इल्लललाह के कहने वाले लोग ही बाक़ी रहेंगें। सलमान ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह(महदी) आपकी कौन सी औलाद से होंगें? आपने इमाम

हुसैन की जानिब इशारा करते हुए फ़रमाया: मेरे मेरे इस फ़रज़न्द की औलाद से होगा।

किताबुल महदी में अबी वायल से रिवायत की गयी वह बयान करता है अली बिन अबी तालिब ने हुसैन की जानिब नज़र करते हुए फ़रमाया मेरा यह फ़रज़ंद सैय्यद है और उसी तरह का नाम रसूलल्लाह(स) ने रखा है। अनक़रीब इसके सुल्ब से एक शख्स ज़ाहिर होगा जिसका नाम तुम्हारे नबी पर होगा। यह उस वक़्त ज़हूर करेगा जबकि लोग ग़फ़लत में पड़े होंगे। हक़ मुर्दा हो चुका होगा जुल्म व जौर ज़ाहिर होगा। उसके ज़हूर से साकिनाने आसमान मसरूर होंगे। यह कुशादा पेशानी, बुलंद नाक, कुशादा शिकम होगा। दायें रुख़सार पर तिल और दाँत मुरत्तब होंगे। ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से उसी तरह भर देगा जिस तरह वह जुल्म व जौर से भरी होगी।

महदी ख़ान ए काबा के ख़ज़ाने की तक़सीम फ़रमायेगें मुन्तख़ब कन्ज़ुल उम्माल में उमर इब्ने ख़त्ताब से रिवायत है, जब उन्होने ख़ान ए काबा के तमाम माल व असबाब को राहे ख़ुदा में तक़सीम करना चाहा तो हज़रत अली(अ) ने फ़रमाया:

तुम यह इरादा तर्क कर दो इसलिये कि तुम इसके अहल नहीं हो इसका मालिक हम कुरैश में से है जो इस माल को राहे खुदा में तकसीम फ़रमायेगा और आखिरी ज़माने में होगा।

मक़ातिलुत तालिबीन में अबील फ़रज इसफ़हानी से रिवायत की गयी अज़हरी बयान करता है मुझसे अली बिन हुसैन ने अपने वालिद के वास्ते से फ़ातिमा(अ) से रिवायत की आँ हज़रत ने फ़ातिमा से फ़रमाया महदी तुम्हारी औलाद से होगा।

अलबुरहान, मुत्तकी हिन्दी की किताब में अबु हरैरा से रिवायत की गयी कि रसूलल्लाह(स) ने फ़रमाया: अगर दुनिया सिर्फ़ एक रात बाकी रह जायेगी खुदावंदे आलम मेरे अहले बैत से एक शख्स को मालिक करार देगा।

अबु हरैरा के वास्ते से रसूलल्लाह(स) से रिवायत की गयी है कि आँ हज़रत ने फ़रमाया क्रियामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक कि उन लोगो पर मेरे अहले बैत से एक शख्स ख़ुरूज करेगा पस उनसे जंग करेगा यहाँ तक कि वह हक़

की तरफ पलट आयेगें।(रावी कहता है) मैंने अर्ज की उसकी हुकुमत का ज़माना कितना होगा तो हुजूर ने फ़रमाया कि पाँच साल या दो साल।

हाफ़िज़ अलकंदूजी (अलहनफ़ी) यनीबीऊल मवादत में रिवायत करते हैं कि इमामे जाफ़रे सादिक(अ) ने सुरये युनुस की इस आयत

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ فَقُلْ إِنَّمَا الْعَيْبُ بِكُمْ فَأَنْتُمْ تُرَوَّأُونَ إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ

तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि आयते करीमा में ग़ैब से मुराद हुज्जतुल काइम(अ) हैं।

यनाबीऊल मवादत में आएशा के वास्ते से आँ हज़रत से रिवायत की है कि हुजूर ने फ़रमाया: महदी मेरी औलाद से होगा जो मेरी सून्नत पर लोगों से जंग करेगा। जिस तरह मैंने वही पर लोगों से जंग की।

सबान की असआबुर रागेबीन में आँ हज़रत से रिवायत की गयी हज़रत ने फ़रमाया: महदी हम(अहले बैत) से है, दीन खुदा का उस पर ख़त्म होगा जिस तरह उसकी इब्तेदा हमारे ज़राये करार पायी।

मुत्तकी हिन्दी की किताब अलबुरहान फ़ी अलामाते महदी आखिरूज़ ज़मान में अली(अ) से रिवायत की गयी है, हज़रत अलीअ(अ) ने आँ हज़रत से अर्ज़ किया महदी हममे से होगा या हमारे ग़ैर से हज़रत ने फ़रमाया: हममे से होगा। खुदावंदे आलम उस पर दीन का खातेमा फ़रमायेगा। जिस तरह हमारे ज़रीये उसने इब्तेदा फ़रमाई फिर हमारे ही सबब खुदा लोगों को फ़ितने से निजात बख़शेगा। जिस तरह उनको शिर्क से निजात बख़शी। और हमारे ही सबब अदावत के बाद उनके दिलों में मुहब्बत पैदा करेगा। जिस तरह इनके दिलों में शिर्क की अदावत के बाद मुहब्बत की जोत जगाई।

इब्ने जौज़ी की तज़क़िरा तुल ख़वास में इब्ने उमर से रिवायत की गयी वह बयान करता है रसूलल्लाह(स) ने फ़रमाया: आखिरी ज़माने में मेरे अहले बैत से एक शख़्स ज़ाहिर होगा उसका नाम मेरे नाम पर होगा, उसकी कुनीयत मेरी कुनीयत पर होगी, ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से उसी तरह भर देगा जिस तरह वह जुल्म व ज़ौर से भरी होगी, और वह महदी है।

अबू सईद खिदरी के वास्ते से रसूलल्लाह(स) से रिवायत की गयी है कि हुज़ूर ने फ़रमाया: महदी का नाम मेरे नाम पर है।

मुत्तकी हिन्दी ने हज़रते अली(अ) से रिवायत की कि आपने फ़रमाया: महदी का इस्मे गिरामी मुहम्मद है।

सबान की असआबुर रागेबीन में वारिद हुआ है कि महदी की रीशे मुबारक जवानों की तरह होगी, आँखें सुरमई और हाजिब तूलानी और नाक बुलंद, रीश घनी होगी। दाये रुखसार और बायें हाथ पर तिल होगा।

यनाबीऊल मवद्दत में इब्ने अब्बास से रिवायत बयान की गयी वह बयान करते हैं रसूलल्लाह(स) ने फ़रमाया: अली(अ) मेरे बाद मेरी उम्मत के इमाम हैं और उनके फ़रज़न्द से काइम अल मुनतज़र जिस वक़्त ज़हूर करेगा ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से इस तरह भर देगा जिस तरह वह जुल्म व जौर से भरी होगी। उस ज़ात की क़सम जिसने जिसने मुझे बरहक़ बशीर और नज़ीर बनाकर भेजा महदी के ज़माना ए ग़ैबत में उसकी इमामत पर साबित क़दम रहने वाले मेरे नज़दीक किमीया से ज़्यादा अज़ीज़ होंगे। जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह क्या आपके फ़रज़न्द काइम को ग़ैबत होगी? हज़रत ने फ़रमाया हाँ खुदा की क़सम

وَلِيْمَجِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ

ऐ जाबिर यह खुदा के अम्र से है और खुदा की जानिब से एक राज़ है जो बंदगाने खुदा से पोशीदा है। पस तुम उसमें कभी शक न करना और खुदा वंदे आलम के अम्र में शक करना कुफ़्र है।

नेशापुरी की मुस्तदरक अलस सहीहैन में रिवायत की गयी है, उम्मे सलमा बयान करती हैं, मैंने पैगम्बरे इस्लाम(स) को महदी का तज़क़िरा फ़रमाते सुना आप ने फ़रमाया: यह हक़ है वह फ़तिमा की औलाद से है।

महदी हम अहले बैत से है।

यनाबीऊल मवद्दत में अबू अय्यूब अंसारी से रिवायत है, वह बयान करते हैं रसूलल्लाह(स) ने फ़ातिमा(अ) से फ़रमाया: मैं अंबीया से अफ़ज़ल और तुम्हारा बाप हूँ और अली अवसीया में बेहतर है जो तुम्हारा शौहर है हमारे दरमियान जो शौहदा में अफ़ज़ल है वह तुम्हारे बाप के चचा हमज़ा हैं और तुम्हारे बाप के चचा का

फ़रज़न्द जाफ़र है जिसके... दो पर हैं जिनके ज़रीये जन्नत में जहाँ चाहते हैं परवाज़ करते हैं और हमारे दरमियान इस उम्मत के दो नवासे हसन व हुसैन जवानाने जन्नत के सरदार हैं, यह दोनो तुम्हारे फ़रज़न्द हैं और हम ही में से महदी है जो तुम्हारी औलाद से है।

अल्लामा मनावी की कंजुल हक़ाएक़ में आँ हज़रत से रिवायत की गयी है, आपने फ़रमाया: ऐ फ़ातिमा, मैं बशारत देता हूँ कि महदी तुम्हारी नस्ल से है।

मुन्तख़ब कंजुल उम्माल में रिवायत की गयी है महदी(अ) हम(अहलेबैत) से औलादे फ़ातिमा की फ़र्द है।

अली हिलाली ने अपने बाप से रिवायत की वह बयान करता है कि मैं हज़रत के मर्ज़ मौत में आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ फ़ातिमा अपने बाप के सरहाने बैठी हुई थी। पस फ़ातिमा ने रोना शुरू किया, यहाँ तक कि आपकी आवाज़ बुलंद हुई, रसूलल्लाह(स) ने फ़ातिमा से फ़रमाया: मेरी पारा ए जिगर तुझे किस बात में रूलाया? शाहज़ादी ने फ़रमाया: मैं आपके बाद रुनुमा होने वाले फ़ितने से डरती हूँ।

हज़रत नें फ़रमाया: मेरी पारा ए जिगर क्या तुम्हे मालूम है खुदा वंदे आलम ज़मीन पर मुत्तला हुआ पस उसने तुम्हारे बाबा को मुन्तख़ब किया और रिसालत अता की फिर मुत्तला हुआ तो तुम्हारे शौहर को मुन्तख़ब किया और मुझ पर वहयी फ़रमाई कि तुम्हारा अक़द अली से कर दूँ, ऐ फ़ातिमा हम अहले बैत को खुदा वंदे आलम ने सात ऐसी फ़ज़ीलतें अती कीं जो किसी एक को भी न हमसे क़ब्ल अता की गयीं और न बाद में अता की जायेगीं। मैं तुम्हारा बाबा खातमुन नबीयीन और नबीयों में अल्लाह के नज़दीक बुज़ुर्ग तरीन हूँ और अली तुम्हारे शौहर मेरे वसी और अवसीया में सबसे बेहतर हैं। और अल्लाह के नज़दीक सबसे महबूब हैं और हममे से तुम्हारे चचा को खुदा वंदे आलम ने दो सबज़ पर अता किये जिसके ज़रीये वह जन्नत में मलाएका के साथ जहाँ चाहते हैं परवाज़ करते हैं। और हम ही में से इस उम्मत के दो नवासे हसन व हुसैन हैं तुम्हारे फ़रज़न्द और जवानाने जन्नत के सरदार हैं। उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे मबऊस फ़रमाया उन दोनो के माँ बाप उनसे अफ़ज़ल हैं, उस परवरदिगार की क़सम जिसने मुझे बरहक़ मबऊस फ़रमाया(अली व फ़ातिमा) दोनो से इस उम्मत में महदी होगा। जबकि फ़ितने ज़ाहिर होंगें राहें मसदूद हो जायेगीं, लूट मार और ग़ारतग़री होगी, बुज़ुर्ग छोटी पर रहम न करेगा और न छोटा बड़े की ईज़ज़त करेगा। उस वक़्त खुदा वंदे आलम महदी को मबऊस फ़रमायेगा जो गुमराही के क़िलों और पौशीदा दिलों को फ़तह करेगा। आखिरी ज़माने में दीन के साथ क़याम करेगा जिस तरह मैंने दीन

के साथ अक्वल ज़माने में क़याम किया था, दुनिया को अदल व इंसाफ़ से भर देगा जिस तरह वह जुल्म व ज़ौर से भरी होगी।

> अलकंजी ने अलबयान में अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत की, वह बयान करता है हुसैन के फ़रज़न्द महदी ज़हूर करेंगे, अगर उनके सामने पहाड़ हाएल होगा वह मिसमार हो जायेगा और उसमे से अपना रास्ता बनायेंगे।

यनाबीऊल मवद्दत में देबल बिन अली खुज़ाई से रिवायत है, वह बयान करते हैं मैंने अपने आका व मौला इमाम रिज़ा(अ) के मक़बरे के लिये कुछ शेअर कहे: इमाम महदी(अ) का ज़हूर हतमी हैv

आप खुदा के नाम के साथ और उसकी बरकतों के साथ क़याम फ़रमायेंगे।

महदी) हमारे दरमियान हक़ व बातिल का तमीज़ फ़रमायेंगे। नेक़कारों पर नेमत और बदकारों पर अज़ाब करेंगे।

देबल बयान करता है: जिस वक़्त इमाम ने यह अशआर सुने आपने शिद्दत से गिरया फ़रमाया और फ़रमाया: ऐ देबल यह अशआर तुम्हारी ज़बान पर रूहूल

कुदुल ने जारी फ़रमाये हैं क्या तुम उस इमाम के बारे में जानते हो, मैंने अर्ज़ की नहीं, मगर सिर्फ़ इस क़दर जानता हूँ मैंने सुना है कि ज़हूर करने वाला इमाम आपकी नस्ल से होगा जो ज़मीन को अदल व इंसाफ़ भर देगा। पस इमाम ने फ़रमाया: मेरे बाद मेरा फ़रज़न्द मुहम्मद होगा और मुहम्मद के बाद उनका फ़रज़न्द अली होगा और अली के बाद उनका फ़रज़न्द हसन होगा और हसन के बाद उनका फ़रज़न्द हुज्जतुल काएम होगा। उसकी ग़ैबत में उसका इन्तेज़ार किया जायेगा और ज़हूर के वक़्त इताअत का मर्कज़ करार पायेगा पस ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से इस तरह भर देगी जिस तरह वह पहले जुल्म व जौर से भरी होगी। अलबत्ता यह ख़बर कि उसका ज़हूर कब होगा, बिला शुब्हा मुझ से मेरे बाबा ने अपने अजदाद के वास्ते से रसूलल्लाह(स) से ख़बर दी कि आँ हज़रत ने फ़रमाया: जिस महदी का ज़हूर क्रियामत की तरह अचानक होगा।

أُولَئِكَ جُزِبُ اللَّهُ

यही सब लोग गिरोहे खुदा हैं।

यनाबीऊल मवद्दत में जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी से इस हदीस की रिवायत की गयी है जिसमें जुन्दल बिन जबीर के रसूलल्लाह(स) की ख़िदमत में हाज़िर होने और उसके खुदा व रसूल पर ईमान लाने का तज़क़िरा है।

जुन्दल बयान करता है (मैं रसूलल्लाह की खिदमत में हाज़िर हुआ) और अर्ज़ की या रसूलल्लाह मैंने ख़्वाब में मूसा बिन इमरान को देखा पस उन्होंने मुझे हुक्म फ़रमाया ऐ जुन्दल मुहम्मद(स) पर ईमान ले आओ जो ख़ातमुन नबीयीन हैं और मुहम्मद के बाद आने वाले अवसीया से मुतमस्सिक हो जाओ, मैंने ख़ुदा का शुक्र अदा करता हूँ कि इस्लाम लाया और ख़ुदा ने मुझे आपके ज़रीये हिदायत दी। या रसूलल्लाह आप मुझे अपने अवसीया के बारे में ख़बर दीजिये। आँ हज़रत ने फ़रमाया: मेरे अवसीया बारह हैं।v

जुन्दल: या रसूलल्लाह हमने तौरैत में इसी तरह देखा है, आप मुझे उनके नाम बताईये।

रसूलल्लाह ने फ़रमाया: सबसे पहले मेरे वसी अली हैं। फिर उनके दो फ़रज़ंद हसन और हुसैन हैं। पस उन्हीं से तुम वाबस्ता रहना और जाहिलों की जिहालत तुम्हे गुरूर में मुब्तला न कर दे और जब ज़ैनुल आबिदीन की विलादत तुम्हारी वफ़ात वाक़े होगी और इस दुनिया से तुम्हारा आखिरी रिज़क दूध होगा।

जुन्दल ने अर्ज की हमने तौरत में और अंबीया की दूसरी कुतुब में ऐलिया, शब्बर, शब्बीर के असमाँ देखे हैं जो कि अली व हसन व हुसैन के असमाँ हैं। हुसैन के बाद कौन होंगे? और उनके असमाँ क्या हैं?

रसूलल्लाह: और जब हुसैन की मुद्दते इमामत होगी पस उनका फ़रज़ंद अली इमाम होगा। लक़ब ज़ैनुल आबेदीन होगा और उसके बाद उनका फ़रज़ंद मुहम्मद बाक़िर होगा और उसके बाद उसका फ़रज़ंद जाफ़रे सादिक़ होगा और उसके बाद उनका फ़रज़ंद मूसा काज़िम होगा और उसके बाद उसका फ़रज़ंद अली रेज़ा होगा और उसके बाद उसका फ़रज़ंद मुहम्मद तक़ी होगा और उसके बाद उसका फ़रज़ंद अली नक़ी और हादी होगा और उसके बाद उसका फ़रज़ंद हसन असकरी होगा। उसके बाद उसका फ़रज़ंद मुहम्मद महदी अलकायम वल हुज्जत होगा जो कि ग़ैबत इख़्तियार करेगा फिर उसके बाद ज़ाहिर होगा और ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से इस तरह भर देगा जिस तरह वह जुल्म व ज़ौर से भरी होगी उसकी ग़ैबत में सब्र करने वालों के लिये मुबारक बाद है और उसकी मुहब्बत में मुत्तकीन के लिये मुबारक बाद है। यही वह लोग हैं खुदावंदेआलम ने अपनी किताब में

जिनकी तारीफ़ इस तरह फरमाई है: هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ कुरआन जिसके मोजिज़ा होने में किसी शुब्ह की गुन्जाईश नहीं है उन परहेज़गारों के लिये अज़ सर ता पा हिदायत है जो ग़ैब पर ईमान रखते हैं।

फिर फ़रमाता है:

[أُولَئِكَ جِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ جِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝۸]

यही लोग खुदा का गिरोह हैं। आगाह हो जाओ खुदा का गिरोह ही कामयाब होने वाला है।

यनाबीऊल मवद्दत में अली बिन अबी तालिब ने जंगे नहरवान के बाज़ ऐसे अज़ीम वाक़ेआत का ज़िक्र फ़रमाया जिसमें शदीद क़िताल की ख़बर दी गयी थी और फ़रमाया यह अम्मे खुदा से है और यह हालात ज़रूर पेश आने वाले हैं। तुम कब तक इन्तेज़ार करोगे, मैं तुम्हें परवरदिगार की जानिब से अन्क़रीब कामयाबी की बशारत देता हूँ, मैं अपने माँ बाप की क़सम खाकर कहता हूँ उनकी तादाद कम होगी और उनकी असमाँ ज़मीन पर मजहूल होंगी।

दो ग़ैबतें -----यनाबीऊल मवद्दत

अली बिन अबी तालिब(अ) फ़रमाते हैं: हमारे कायम की दो ग़ैबतें हैं, जिनमें से एक तूलानी होगी। उसकी इमामत पर सिर्फ़ मोहकम और सही मारेफ़त का हामिल ही साबित क़दम रह सकेगा।[९][९]

अलबुरहान फ़ी अलामाते महदी आखिरुज़्ज़मान में अबु अब्दुल हुसैन बिन अली से रिवायत की गयी है। आप ने फ़रमाया: महदी(अ) के लिये दो ग़ैबतें होंगी। जिनमें से एक इस क़दर तूलानी होगी कि बाज़ लोग कहेंगे कि महदी ने इन्तेक़ाल किया और बाज़ कहेंगे कि महदी चले गये और आपके जाए क़याम के बारे में आपके ख़ादिम के सिवा किसी को ख़बर न होगी।[१०][१०]

यनाबीऊल मवद्दत में अली बिन अबी तालिब से रिवायत की गयी है कि हज़रत ने महदी की सीरत के बारे में फ़रमाया: महदी हम अहले बैत से होगा जो दुनिया में रौशन चिराग़ की मानिन्द होगा जिसकी ज़िन्दगी सालेहीन जैसी होगी। मुश्किलात को हल करेगा और मुश्किल में गिरफ़तार इंसान को उससे निजात दिलाएगा। ज़ालिमों और काफ़िरों का इज्तेमा ख़त्म कर डालेगा और मुसलमानों में इसलाह करेगा।

लव ला हुज्जतो लसाख़तिल अर्ज़

(अगर हुज्जते खुदा न हो तो ज़मीन धंस जायेगी)

हाफ़िज़ अल क़दूज़ी ने यनाबीऊल मवद्दत में जाफ़र सादिक़(अ) से और उन्होने अपने वालिदे के वास्ते से अपने दादा अली बिन हुसैन से रिवायत की इमाम ने

फ़रमाया: हम मुसलमानों के इमाम हैं तमाम दुनिया के मोमीनों पर खुदा की जानिब से उसकी हुज्जत हैं। और मुसलमानों के मौला हैं और हम अहले ज़मीन के लिये उसी तरह अमान हैं जिस तरह सितारे आसमान वालों के लिये अमान हैं। और हमारे ही सबब से आसमान ज़मीन पर गिरने से टिका हुआ है। हमारे ही सबब बारिश होती है, रहमतेँ तक़सीम होती हैं। और ज़मीन अपनी बरकतों को ज़ाहिर करती है अगर ज़मीन पर हम अहले बैत में से कोई न हो तो ज़मीन अपने बसने वालों के साथ धंस जायेगी और जब से खुदा वंदे आलम ने आदम को खल्क़ फ़रमाया है उस वक़्त से ज़मीन हुज्जते खुदा से ख़ाली नहीं रही।

1- या तो वह हुज्जत ज़ाहिर हो।

2- या पौशीदा और ग़ायब हो।

क्रियामत तक ज़मीन हुज्जते खुदा से ख़ाली नहीं रह सकती। अगर खुदा की हुज्जत न हो तो खुदा की इबादत किस तरह होगी।

सुलेमान रावी ने इमाम जाफ़रे सादिक (अ) से अर्ज़ की आका पौशीदा और ग़ायब हुज्जत से लोग किस तरह फायदा हासिल करेंगे इमाम ने फ़रमाया: जिस

तरह लोग आफ़ताब से फ़ायदा हासिल करते हैं जबकि वह बादलों में पोशीदा होता है।[११][११]

यनाबीऊल मवद्दत में हसन बिन अली(अ) से रिवायत की गयी आपने फ़रमाया: जिस वक़्त कायम ज़हूर फ़रमायेंगे लोग आपका इँकार करेंगे इसलिये कि जब ज़हूर फ़रमायेंगे नौजवान होंगे हालाँकि लोगों को गुमान यह होगा कि आप बुढ़े हो चुके हैं।

यनाबीऊल मवद्दत में मुहम्मद बिन मुसलिम से रिवायत की गयी वह बयान करता है मैंने हज़रत इमाम मुहम्मद बाकिर (अ) से अर्ज़ की आका इस आयत की तावील क्या है:

[وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۗ] [१२][१२]

हज़रत ने फ़रमाया: जब इस आयत की तावील आयेगी तो मुशरेकीन से क़ेताल किया जायेगा यहाँ तक कि वह खुदा वंदे आलम की वहदानीयत का इक़रार करें ताकि शिर्क बाकी न रहे और यह अमल कायम के ज़हूर के वक़्त होगा।

रिफ़ाआ बिन मूसा बयान करता है मैंने इमाम सादिक(अ) को इस आयत का तिलावत फ़रमाते हुए सुना:

[وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ] [१३]

हालाँकि आसमान जो फ़रिश्ते और ज़मीन में जो लोग हैं वह सब उसके सामने खुशी से या नाखुशी से सरे तसलीम झुका चुके हैं।

उसके बाद हज़रत ने फ़रमाया जब कायम ज़हूर करेगा उस वक़्त ज़मीन के हर खिते पर कलेमा ए ला इलाहा इल्ललाहा व अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह की सदा बुलंद होगी।

यनाबीऊल मवद्दत में इमाम बाक़िर(अ) से रिवायत की गयी हज़रत ने फ़रमाया: खुदा वंदे आलम कायम के ज़हूर के वक़्त इस्लाम को तमाम अदयान पर कामयाबी अता फ़रमायेगा।

यनाबीऊल मवद्दत में इमाम जाफ़र सादिक(अ) से रिवायत की गयी, हज़रत ने फ़रमाया: कायम के ज़हूर के वक़्त मोमिनीन खुदा की नुसरत से खुश व खुर्रम होंगे।

महदी (अ) के अंसार

सुनने इब्ने माजा, रसूलुल्लाह(स) इरशाद फ़रमाया: मशरिक से लोग ज़ाहिर होंगे और महदी की हुकुमत तसलीम करेंगे[१४][१४]

सबान ने इसआफ़ूर रागेबीन में बयान किया है कि रिवायत में वारिद हुआ है इमाम महदी(अ) के ज़हूर के वक़्त एक मलक आवाज़ देगा। यह महदी खुदा का खलीफ़ा है पस तुम लोग इसकी इत्तेबा करो और महदी इनताकिया के गार से ताबूते सकीना निकालेंगे। और शाम के पहाड़ से तौरैत की किताबों को निकालेंगे

जिस की वजह से यहूदियों पर आपकी हुज्जत कायम हो जायेगी। और उनमें से अकसर लोग ईमान ले आयेगें।

बग़वी की किताब मसाबीहुस सुन्ना में अबू सईद के वास्ते से पैग़म्बरे इस्लाम(स) से महदी के बारे में रिवायत की गयी हुज़ूर ने फ़रमाया: एक शख्स सवाल करेगा या महदी मुझे कुछ अता करें चुनाँचे आप इस क़दर अता करेंगें जिस को वह संभालने रक कादिर नही होगा। और मुन्तख़बे कंज़ुल उम्माल में इस तरह है। हज़रत में फ़रमाया: मेरी उम्मत से महदी ज़हूर करेगा जो पाँच या सात या नौ साल ज़िन्दगी गुज़ारेगा उसके पास एक शख्स आयेगा और कहेगा ऐ महदी मुझे अता कीजीये आप उसको अपने लिबास से इस क़दर अता करेंगें जिसको वह उठा नही सकेगा।

यनाबीऊल मवद्दत में अमीरुल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब से रिवायत की गयी हज़रत ने फ़रमाया नुसरते ख़ुदा उस वक़्त तक नही आयेगी जब तक कि वह मौत से ज़्यादा आसान न हो जाये और उसी बारे में परवरदिगारे आलम का क़ौल है:

[حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا ۗ ۱۵]

ताकि जब वह पैगम्बर अपनी इम्मत वालों के ईमान लाने से मायूस हो गये और उम्मत वालों ने यह गुमान कर लिया कि उनके झूट बोला गया है कि खुदा उनकी मदद करेगा तो उस वक़्त हमारी मदद उनके पास आयेगी। और यह उसी वक़्त होगा जब हमारा कायम ज़हूर करेगा।

मुन्तख़ब कंज़ुल उम्माल में आँ हज़रत(स) से रिवायत की गयी हज़रत ने फ़रमाया: हम अहले बैत ही की वह फ़र्द होगा जिसकी इमामत में ईसा नमाज़ अदा करेंगे।

आँ हज़रत(स) ने इरशाद फ़रमाया: जब महदी मुतवज्जेह होंगे और ईसा बिन मरियम नाज़िल होंगे और उनके बालों से पानी के कतरात टपक रहे होंगे, उस वक़्त इमाम महदी(अ) ईसा(अ) से फ़रमायेंगे आप लोगों को नमाज़ पढ़ाईये, ईसा फ़रमायेंगे नमाज़ का क़याम आपके ज़रीये होगा। चुनाँचे ईसा मेरे फ़रज़ंद महदी की इमामत में नमाज़ अदा करेंगे।

(गायतुल मामूल)

अनवारुत तंज़ील में इस आयत

وَأِنَّهُ لَعَلَّمَ لِّلسَّاعَةِ [١٦]

की तफ़सीर इस तरह बयान की गयी कि ईसा ज़मीन के पाक व पाकीज़ा मक़ाम(अफ़ीक़) पर नाज़िल होंगे। आपके हाथों में खंजर होगा जिससे आप दज्जाल को क़त्ल करेंगे उसके बाद आप बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ लायेंगे। जबकि लोग नमाज़ सुबह पढ़ रहे होंगे पस इमाम पीछे रहेंगे और ईसा इमाम को आगे बढ़ावेंगे और उनके पीछे नमाज़ अदा करेंगे, ईसा की नमाज़ शरीअते मुहम्मदी पर होगी।

महदी(अ.) का परचम

हाफ़िज़ कंदूज़ी की यनाबीऊल मवद्दत में नौफ़ से रिवायत है वह बयान करता है इमाम महदी के परचम पर लिखा होगा **البيعة لله** यानी बैअत सिर्फ़ अल्लाह के लिये मख़सूस है।[१७][१७]

मुत्तकी हिन्दी इब्ने उमर से रिवायत से करते हैं कि आँ हज़रत ने अली का हाथ अपने हाथों में लिया और फ़रमाया अली के सुल्ब से एक जवान ज़ाहिर होगा जो दुनिया को अदल व इंसाफ़ से भर देगा पस जिस वक़्त तुम यह देखो तो तुम तमीमी जवान के साथ हो जाना इसलिये कि यह शख़्स मशरिफ़ वारिद होगा और महदी का अलमबरदार होगा।

रिवायत की गयी है कि इमाम हसन असकरी(अ) के यहाँ एक बच्चे की विलादत हुई पस उन्होने उस बच्चे का नाम मुहम्मद रखा और तीसरे रोज़ अपने असहाब के सामने लाये और फ़रमाया यह मेरे बाद तुम्हारा इमाम और तुम पर मेरा खलीफ़ा है। यह वह कायम है जिसके इन्तेज़ार में गर्दने लंबा हो जायेगी पस जिस वक़्त ज़मीन जुल्म व ज़ौर से भर जायेगी उस वक़्त ज़हूर करेगा और उसको अदल व इंसाफ़ से भर देगा।

महदी से हर चीज़ खुश होगी

आँ हज़रत से महदी के रुक्न और मक़ाम के दरमियान बैअत और आपके शाम की जानिब से ज़हूर फ़रमाने की रिवायत की गयी हज़रत ने फ़रमाया जिबरईल महदी के आगे और मीकाईल पीछे होंगे। महदी से अहले आसमान व ज़मीन, परिंदे, दरिंदे और समंदर की मछलीयाँ खुश होंगी।

(अलबुरहान फ़ी अलामात महदी आख़िरुज़ज़मान)

अलामते ज़हूर

शबलंजी का नूरुल अबसार में अबू जाफ़र(अ) से इमाम महदी के ज़हूर की अलामात से रिवायत की गयी है हज़रत ने फ़रमाया:

- 1- मर्द औरतों से मुशाबेहत इख्तियार करेंगे और औरतें मर्दों से।
- 2- औरतें जानवरों पर सवार होंगीं।
- 3- लोग नमाज़ पढ़ना छोड़ देंगे।
- 4- ख्वाहिशे नफ़स की पैरवी करेंगे।
- 5- खून बहाना मामूली बात समझी जायेगी।
- 6- सूदखोरी आम होगी और उसके ज़रीये कारोबार होगा।
- 7- ज़ेना खुल्लमखुल्ला किया जायेगा।
- 8- मकानों को मज़बूत बनाया जायेगा।
- 9- रिश्वत का बाज़ार गर्म होगा।
- 10- लोग झूट को हलाल करार देंगे।
- 11- ख्वाहिशाते नफ़सानी की पैरवी करेंगे।
- 12- दीन को दुनिया के बदले फ़रोख्त कर देंगे।
- 13- क़त ए रहम करेंगे।
- 14- हिल्म व बुर्दबारी को कमज़ोर समझा जायेगा।
- 15- जुल्म पर फ़ख़ किया जायेगा।
- 16- उमारा फ़ासिक़ होंगे।
- 17- वोज़ारा झुटे होंगे और अमीन ख़्यानतकार।
- 18- मददगार ज़ालिम होंगे और कारी फ़ासिक़।

- 19- जुल्म ज़्यादा होगा।
- 20- तलाक़ें ज़्यादा होंगीं।
- 21- ज़ालिम की शहादत को क़बूल किया जायेगा।
- 22- शराब आम होगी।
- 23- मुज़क्कर मुज़क्कर पर सवार होगा।
- 24- औरतें औरतों को काफ़ी समझेगीं।
- 25- फ़ोकारा के माल को दूसरे लोग ख़ायेगें।
- 26- सदक़ा देने को नुक़सान ख़्याल किया जायेगा।
- 27- शरीर लोगों की ज़बानों से लोग डरेगें।
- 28- सुफ़यानी शाम से ख़ुरूज़ करेगा।
- 29- मक्के व मदीने के दरमियान मक़ामे बैदा में तबाही वाक़े होगी।

रुक्न व मक़ाम के दरमियान आले मुहम्मद का एक जवान क़त्ल किया जायेगा। और आसमान से निदा देने वाला निदा देगा कि हक़(महदी) और उनके चाहने वालो के साथ है और जब महदी ज़हूर करेगें तो अपनी पुश्त को काबा से टेक लगाये हुए होंगें। और आप के चाहने वालो में से ३१३ अफ़राद आपके गिर्द जमा हो जायेगें। सबसे पहले आप इस आयत की तिलावत फ़रमायेगें:

بَقِيَّةُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

फिर आप फ़रमायेंगे में **بَقِيَّةُ اللَّهِ** और उसका खलीफ़ा और तुम लोगों पर खुदा की हुज्जत हूँ। जो शख्स भी आप पर सलाम करेगा इस तरह कहेगा।

السلام عليك يا بقية الله في الارض

और जब आपके पास दस हज़ार अफ़राद जमा हो जायेंगे तो कोई यहूदी और नसरानी बाकी न रहेगा। और न कोई काफ़िर ही बचेगा। और सबके सब आप पर ईमान लायेंगे और तसदीक करेंगे और सिर्फ़ मिल्लते इस्लाम होगी और जो शख्स भी रूए ज़मीन पर खुदा वंदे आलम के सिवा मअबूद होगा उस पर आसमान से आग नाज़िल होगी और जलायेगी।

मुत्तकी हिन्दी ने अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास से रिवायत की है वह बयान करते हैं आपने फ़रमाया: महदी उस वक़्त ज़हूर फ़रमायेंगे जब आफ़ताब से निशानी ज़ाहिर होगी।

मुहम्मद इब्ने अली ने फ़रमाया: हमारे महदी के लिये दो ऐसी निशानीयों का ज़हूर होगा। जिसका ज़मीन व आसमान की खिलक़त से पहले कभी ज़हूर न हुआ होगा।

यानी रमज़ानुल मुबारक की पहली रात में माहताब को गहन लगे और आफ़ताब को दरमीयाने माह में गहन लगेगा यह दोनो अम्र ज़मीन व आसमान की खिलक़त के बाद से कभी पेश न आये होंगे।[१८][१८]

मुत्तकी हिन्दी हनफ़ी, हकम बिन अतबा से रिवायत करते हैं, मैने मुहम्मद बिन अली से कहा, सुना है कि अनक़रीब आपके दरमियान से एक शख्स ज़ाहिर होगा जो इस उम्मत को अदल व इंसाफ़ से भर देगा। इमाम ने फ़रमाया: अगर दुनिया से सिर्फ़ एक रोज़ भी बाक़ी रह जायेगा खुदा वंदे आलम उस रोज़ को इस क़दर तूलानी कर देगा यहाँ तक कि वही सब होगा जो इस उम्मत की ख़्वाहिश होगी लेकिन इससे क़ब्ल शदीदतरीन फ़ितने वुजूद में आयेंगे, लोग रात के वक़्त हालत इतमीनान में गुज़ारेगें, और सुबह हालते कुफ़्र में। पस तुम में से जिस को भी यह हालात पेश आये उसे अपने परवरदिगार से डरना चाहिये। और अपने अपने घरों में रहना चाहिये।[१९][१९]

हाफ़िज़ कंदूज़ी की किताब यनाबीऊल मवद्दत में इस आयते करीमा **وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ**[२०] और कान लगाकर सुन रखो कि दिन पुकारने वाला नज़दीक ही की जगह से आवाज़ देगा जिस दिन लोग एक सख़्त चीज़ को बख़ूबी

सुन लेंगे वही ख़ुरूज का दिन होगा। आयते करीमा के बारे में इमाम सादिक(अ) ने फ़रमाया मुनादिए कायम और उनके वालिद के नाम से निदा करेगा और आयते मज़कूरा में निदा से निदाए आसमानी मुराद है और उसी रोज़ इमाम महदी(अ) ज़हूर फ़रमायेंगे।

रिवायत की गयी है कि जिस वक़्त इमाम महदी(अ) ज़हूर फ़रमायेंगे, तो बुलंदी से एक मलक इस तरह आवाज़ देगा: यह ख़लीफ़ा ए ख़ुदा महदी(अ) है पस तुम लोग उसकी पैरवी करो।

अबी अब्दिल्लाहिल हुसैन इब्ने अली(अ) से रिवायत की गयी है, आपने फ़रमाया कि जिस वक़्त तुम आसमान की निशानी देखो यानी मशरिक़ की जानिब से अज़ीम आग बुलंद होते हुए देखो जबकि चंद रातें बाक़ी रहेगीं वह वक़्त आले मुहम्मद(अ) और लोगों की आसानी का वक़्त होगा।

यनाबीऊल मवद्दत में अल्लाह के इस क़ौल: अगर हम चाहें तो उन लोगों पर आसमान से आयत का नुज़ूल हो।

इस आयत के बारे में अबू बसीर और इब्ने जारूद के वास्ते से इमाम बाकिर(अ) से रिवायत की गयी है इमाम ने फ़रमाया: यह आयत कायम के बारे में नाज़िल हुई है। एक मुनादी आसमान से कायम(अ) और आपके वालिद के नाम की निदा करेगा।

कंजी अलबयान में अब्दुल्लाह इब्ने उमर से रिवायत बयान की गयी है वह करता है आँ हज़रत(स) ने फ़रमाया: जिस वक़्त महदी ज़हूर करेगा उनके सर पर अब्र होगा जिससे निदा करने वाला निदा करेगा यह ख़ुदा का ख़लीफ़ा महदी(अ) है. पस तुम लोग उसका इत्तेबा करो।

बुरहान और अक़दुद दोरर में बयान किया गया है कि यह निदा तमाम अहले ज़मीन के लिये आम होगी। जिसको हर शख़्स अपनी अपनी ज़बान और लुगत में सुनेगा।[२१][२१]

इमाम महदी की अलामते ज़हूर के बारे में अबू नईम ने हज़रत अली(अ) से रिवायत की है आपने फ़रमाया: महदी का ज़हूर उसी वक़्त होगा जबकि दुनिया का एक तिहाई हिस्सा क़त्ल हो जायेगा एक तिहाई दुनिया मर जाये और एक बाकी रहेगी।

सुफ़यानी यनाबीऊल मवद्दत में हुज्जत के वास्ते से अली से अल्लाह ताला के इस क़ौल

ولو ترى اذ فزعوا فلا فوت

के बारे में रिवायत की गयी हज़रत ने फ़रमाया: हमारे कायम का ज़हूर से क़ब्ल सुफ़यानी ख़ुरूज करेगा जो एक औरत के हम्मल के बराबर मुद्दत(९ माह) हुकुमत करेगा इसका लश्कर मदीने आयेगा और जैसे ही मक़ामे बैदा पहुचेगा ख़ुदा उसको बर्बाद कर देगा।[२२][२२]

इमाम महदी (अ) के ज़हूर के अलामात से मुतअल्लिक अमीरूल मोमीनीन अली(अ) से रिवायत की गयी हज़रत ने फ़रमाया: सुफ़यानी ख़ालिद इब्ने यज़ीद इब्ने अबी सुफ़यान की औलाद से होगा जिसका पेट बड़ा और चेहरे पर चेचक के निशान और आँख में सफ़ेद दाग़ होगा। दमिश्क़ से ख़ुरूज करेगा औरतों के शिकमों को चाक कर के बच्चों को भी क़त्ल कर डालेगा और मेरे अहले बैत से एक शख़्स काबे में ज़हूर करेगा जिसके साथ ख़ुदाई लश्कर होगा जो सुफ़ायान के लश्कर को शिकस्त देगा। बस सुफ़यान अपने लश्कर के साथ वापस जायेगा जैसे ही उसका लश्कर मक़ामे बैदा में पहुचेगा तबाह हो जायेगा और कोई एक भी बाकी नहीं बच सकेगा।

पाँच अलामतें

महदी(अ.) के ज़हूर के बारे में अबू अब्दिल्लाह हुसैन इब्ने अली(अ.) से रिवायत की गयी, इमाम ने फ़रमाया: महदी के ज़हूर की पाँच अलामतें हैं:

- 1- सुफ़यानी का ख़ुरुज
- 2- यमानी
- 3- आसमान से आवाज़ आना।
- 4- मक़ामे बैदा में तबाही।
- 5- नफ़से ज़क़िय्या का क़त्ल होना।[२३][२३]

यनाबीउल मवद्दत में कंदूजी ने अबू अमामा से रिवायत की वह बयान करता है कि आँ हज़रत(स) ने हमसे ख़िताब करते हुए दज्जाल का तज़क़िरा किया और फ़रमाया: मदीने से गंदगी को इस तरह दूर करेगा जिस तरह माद्दा लोहे की खोट को दूर करता है। पस उम्मे शरीक ने रसूलल्लाह(स) से अर्ज़ की या रसूलल्लाह उस रोज़ अरब कहाँ होंगे? आपने इरशाद फ़रमाया: उस रोज़ अरब बहुत कम होंगे, और सबके सब बैतुल मुक़द्दस में होंगे। और उनका इमाम महदी(अ) होगा।

आखरी ज़माने में इमाम महदी की अलामत के बारे में अबी जाफ़र से रिवायत की गयी इमाम ने फ़रमाया: इमाम महदी रोज़े आशूरा ज़हूर फ़रमायेंगे और यह वहीरोज़ है जिस दिन इमाम हुसैन(अ) शहीद हुए, दसवीं मुहर्रम थी और हफ़्ते का दिन था, महदी रुक्न व मक़ाम के दरमियान खड़े होंगे दाहिनी जानिब जिबरईल(अ) और बाँये जानिब मीकाईल होंगे। ज़मीन के हर गोशे से आपके शिया बैअत के लिये जमा हो जायेंगे। आपके शियों के लिये ज़मीन सिमट जायेगी। आप ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से भर देंगे जिस तरह वह जुल्म व जौर से भरी होगी।

महदी(अ)के शियों के लिये ज़मीन की तनाबें सिमट जायेंगी। कुदरते खुदा से ज़मीन के गोशे गोशे से लोग चंद लम्हात के अंदर मक्के में जमा हो जायेंगे।[२४][२४]

हाकिम नेशापुरी की मुस्तदरक अलस सहीहैन में अबू सईद ख़िदरी बयान करते हैं रसूलल्लाह(स) ने इरशाद फ़रमाया: मेरी उम्मत के आखरी(ज़माने) में महदी ज़हूर करेगा। खुदा वंदे आलम उसको बारिशों से सैराब फ़रमायेगा। और ज़मीन अपने नबातात को ज़ाहिर कर देगी, अमवाल की सहीह तकसीम करेगा, जानवरों की कसरत होगी और उम्मते इस्लामिया साहिबे अज़मत होगी।

हाकिम नेशापुरी की मुस्तदरक अलस सहीहैन में पैगम्बरे इस्लाम(स) से रिवायत की गयी है, हज़रत ने फ़रमाया: मेरी उम्मत से महदी होगा, (जिस की हुकुमत) कम अज़ सात(साल) वर्ना नौ(साल) होगी। उसके ज़माने में मेरी उम्मत पर इस क़दर नेमतें नाज़िल होंगी जिस से कब्ल इस तरह नेमतों का नुज़ूल न हुआ होगा। ज़मीन खाने की तमाम चीज़ें अता करेगी जिसकी लोगों से ज़खीरा अंदोज़ी न की जायेगी। उस रोज़ माल जमा होगा एक शख्स खड़ा होगा और कहेगा इस माल को ले लो।

यनाबीउल मवदत में अबी ख़ालिद अलकाहिल ने इमाम जाफ़र सादिक(अ) से अल्लाह तआला के इस क़ौल

فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمْ اللَّهُ جَمِيعًا

(पस नेकीयों में जल्दी करो, तुम जहाँ भी होगे अल्लाह तुम सब को ले आयेगा।) की रिवायत की गयी है आपने फ़रमाया: आयत से कायम(अ) के असहाब मुराद हैं। जिनकी तादाद ३१३ होगी। खुदा की क़सम उम्मते मअदूदह से यही लोग मुराद हैं यह सब लोग मौसमे ख़रीफ़ की तेज़ व तुन्द बारिश की तरह एक लम्हे में जमा हो जायेंगे।

यनाबीउल मवदत में अल्लाह के इस क़ौल

ولئن اخرجنا عنهم العذاب الى امة معدودة

के बारे में रिवायत बयान की गयी रावी बयान करता है उम्मते मअदूदह से महदी के असहाब मुराद हैं जो आखरी ज़माने में होंगे जिनकी तादाद ३१३ होगी। जिस तरह बद्र में रसूलुल्लाह (स) के असहाब की तादाद ३१३ थी। सबके सब एक लम्हे में खरीफ़ की तेज़ व तुन्द बारिश की तरह जमा हो जायेंगे।

तारिखे इब्ने असाकर (शाफ़ेई) में इस तरह रिवायत की गयी है जिस वक़्त कायमें आले मुहम्मद(अ) ज़हूर फ़रमायेंगे पस खुदा वंदे आलम मशरिफ़ व मगरिब वालों को इस तरह जमा फ़रमायेगा जिस तरह मौसमे खरीफ़ की तेज़ व तुन्द बारिश होती है। चुनाँचे महदी के रफ़का अहले कूफ़ा से और अबदाल अहले शाम से होंगे।[२५][२५]

यनाबीऊल मवदूदत में अल्लाह तआला के इस क़ौल

اعلموا ان الله يحيى الارض بعد موتها

समझ लो कि खुदा ज़मीन को ज़िन्दा करता है बाद इसके कि उसकी मौत वाक़े हो चुकी हो।, के बारे में सलाम बिन मुसतनीर के वास्ते से इमाम बाकिर(अ) से रिवायत की गयी, इमाम ने फ़रमाया: (खुदावंदे आलम) कायम के सबब ज़मीन को ज़िन्दा फ़रमायेगा जो कि जुल्म के सबब से मुर्दा हो चुकी होगी और आप अपने अदल के ज़रीये उसको ज़िन्दा फ़रमायेंगे।

यनाबीऊल मवद्दत में अल्लाह तआला के इस क़ौल

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لِيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا

और अहले किताब में यकीनन उस पर ईमान लायेगें अपनी मौत से क़बल और क्रियामत के दिन उन पर गवाह होगा।

(सूरह निसा आयत १५९)

रावी बयान करता है क्रियामत से क़बल ईसा(अ) नाज़िल होंगें, उस वक़्त यहूदी और ग़ैर यहूदी कोई बाकी न रहेगा मगर सबके सब अपने इन्तेक़ाल से क़बल(महदी) पर ईमान ले आयेगें। और ईसा(अ) इमाम महदी(अ) की इमामत में नमाज़ अदा करेगें।

तज़किरातुल ख़वास में सिब्ते इब्ने जौज़ी(अलहनफ़ी) बयान करता है कि सदयी बयान करता है कि महदी(अ) और ईसा(अ)(एक मक़ाम पर) जमा होंगें। पस जब नमाज़ का वक़्त होगा, इमाम ईसा से फ़रमायेगें आप नमाज़ पढ़ायें लेकिन ईसा फ़रमायेंगें आप नमाज़ के लिये ज़्यादा बेहतर हैं पस ईसा इमाम महदी के साथ मामूम की हैसियत से नमाज़ पढ़ेंगें।

इमाम का क़िताल हक़ पर होगा।

सही मुस्लिम में जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह अंसारी बयान करते हैं कि मैंने आँ हज़रत (स) को फ़रमाते सुना: मेरी उम्मत का एक ग़िरोह इज़हारे हक़ के लिये क्रियामत तक जंग करता रहेगा, पस ईसा(अ) तशरीफ़ लायेंगे उनका हाकिम ईसा से कहेगा आईये हमें नमाज़ पढ़ाईये वह कहेंगे तुम में बअज़ बअज़ पर इस उम्मत की अता करदा बुज़ुर्गी के सबब हाकिम है।[२६][२६]

असआफ़ूर रागेबीन में सबान(अलहनफ़ी) बयान करता है कि बअज़ रिवायत में वारिद हुआ है कि इमाम के ज़हूर के वक़्त बुलंदी से एक फ़रिश्ता इस तरह आवाज़ देगा यह महदी खुदा की ख़लीफ़ा है, पस तुम लोग इसकी पैरवी करो।

लोगों के दिलों में आपकी मुहब्बत भर जायेगी। मशरिक् व मग़रिब की हुकुमत आपके हाथों में होगी। रुक्न और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान आपसे बैअक करने वालों की तादाद अहले बद्र(३१३) के बराबर होगी। फिर आपकी ख़िदमत में शाम के अबदाल हाज़िर होंगे। खुदावंदे आलम आपकी हिमायत में ख़ुरासान से लश्कर रवाना फ़रमाएगा जिनके परचम स्याह होंगे, फिर आप शाम की जानिब मुतवज्जेह होंगे

और दूसरी रिवायत में है कि आप कूफ़े की जानिब मुतवज्जेह होंगे। खुदावंदे आलम आपकी नुसरत तीन हज़ार फ़रिश्तों से फ़रमाएगा। और असहाबे कहफ़ आपके मददगार होंगे।

सुयूती का बयान है कि असहाबे कहफ़ के इस मुद्दत तक ताख़ीर करने की वजह यही है कि वह इस उम्मत में दाख़िल हों और ख़लीफ़ा ए हक़ से मुलाक़ात करें। और इमाम के लश्कर के आगे क़बीला ए तमीम का एक शख़्स होगा, जिसकी दाढ़ी ख़फ़ीफ़ होगी और नाम शुऐब इब्ने सालेह होगा जिबरईल आपके लश्कर के सामने और मीकाईल पुश्त पर होंगे। सुफ़यानी अपने लश्कर के साथ ख़ुरूज करेगा। और मक़ामे बैदा में पहुच कर बर्बाद हो जायेगा। जिनमें से मुख़िबर के सिवा कोई और न बचेगा। कामयाबी महदी(अ) की होगी और सुफ़यानी को क़त्ल कर दिया जायेगा।

असआफ़ुर राग़ेबीन में महदी (अ) के बअज़ आसार के बारे में इस तरह बयान किया गया है:

- आपका जुहूर ताक़ सालों में होगा।
- आपकी हुकुमत मगरिब व मशरिक् पर मुहीत होगी।
- आपके लिये ख़ज़ाने ज़ाहिर होंगे।

· ज़मीन में किसी किस्म की तबाहकारी न होगी।

मुन्तखबे कंजुल उम्माल में अली(अ) से रिवायत की गयी है, आपने फ़रमाया: तालेक़ान के लिये मुबारकबाद है। इसलिये कि तालेक़ान में खुदावंदे आलम के खज़ाने हैं जिनका तअल्लुक़ न सोने से है न चाँदी से, बल्कि उसमें ऐसे लोग मौजूद हैं जिन्हे खुदावंदे आलम की कामिल मारेफ़त हासिल है। और वह लोग इमाम महदी(अ) के अंसार होंगे।

महदी(अ) रुकने शदीद हैं

यनाबीउल मवदत में महज्जह की किताब से इस तरह रिवायत की गई है रावी बयान करता है कि हज़रत लूत अपनी क़ौम से इस क़ौल का मतलब

لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً أَوْ آوِي إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ

(सूरह हूद आयत ८०)

इसके अलावा कुछ और नहीं था कि उन्होंने महदी की कुव्वत और आपके अंसार की शुजाअत की तमन्ना की थी और यही लोग रुकने शदीद हैं। क़ायम के असहाब से एक मर्द की ताक़त चालीस लोगों के बराबर होगी और उनके मर्दों का दिल फ़ौलाद से ज़्यादा सख़्त होगा। पहाड़ों से गुज़रेगें, पहाड़ टुकड़े टुकड़े हो जायेगा। और वह अपनी तलवारों को उस वक़्त तक म्यान में नहीं रखेंगे जब तक कि खुदावंदे आलम राज़ी न हो जाये।

यनाबीउल मवद्दत में हाफ़िज़ अलकंदूज़ी अलहन्फ़ी, अबू जाफ़र(अ) से रिवायत करते हैं कि इमाम ने फ़रमाया: कि खुदावंदे आलम हमारे चाहने वालों के दिलों में रोअब पैदा कर देगा लेकिन जब हमारा कायम ज़हूर करेगा उस वक़्त हमारे चाहने वाले शेर से ज़्यादा बहादुर होंगे और तलवारों से गुज़र जायेंगे।

सबान ने असआफ़ुर रागेबीन में महदी(अ) के ज़हूर से मुतअल्लिक बअज़ आसार का तज़क़िरा इस तरह किया: आपका ज़हूर ताक़ सालों मसलन एक या तीन, पाँच या सात में होगा। मक्के में आपकी बैअत करने के बाद आपका लश्कर कूफ़े की जानिब रवाना होगा। उसके बाद मुख्तलिफ़ शहरों में तीतर बीतर हो जायेगा।

यनाबीउल मवद्दत में अल्लाह के इस क़ौल

يا ايها الذين آمنوا صبروا و صابروا و رابطوا

की तफ़सीर इस तरह की गई है:

اصبروا و صابروا यानी अपने दुश्मन की अज़ीयत पर सब्र करो,

و رابطوا और अपने इमाम महदी(अ) से वाबस्ता रहो।

(सलमा शाफ़ेई) अक़दुद दुरर में अबी अब्दिल्लाहिल हुसैन इब्ने अली(अ) से रिवायत करता है, आपने इरशाद फ़रमाया: जब मशरिक़ का जानिब में तीन रोज़

या सात रोज़ आग देखो पस समझ लेना कि वही आले मुहम्मद (अ) के ज़हूर का ज़माना है। इन्शाँ अल्लाह।

फिर एक मुनादी आसमान से महदी के नाम से नेदा करेगा जिसको मशरिफ़ व मगरिब के तमाम लोग सुनेंगे। यहाँ तक कि गहरी नींद और नीम बेदारी की हालत में सोने वाले भी उस आवाज़ को सुन लेंगे। गहरी नींद में सोने वाला आवाज़ सुनते ही बेदार हो जायेगा और नीम ख़वाबी में मुब्तला शख्स उठकर बैठ जायेगा और बैठा हुआ खड़ा हो जायेगा और दौड़ पड़ेगा। ख़ुदा वंदे आलम उस आवाज़ को सुनकर जवाब देने पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाएगा क्यो कि यह आवाज़ रुहुल अमीन जिबरईल (अ) की होगी।

महदी (अ) की हुक्मत पाँचवी होगी

इब्ने हजर शाफ़ेई की सवाएके मोहरेका में अबिल कासिम तबरानी के वास्ते से आँ हज़रत(स) से रिवायत करता है आँ हज़रत ने फ़रमाया: मेरे बाद अंकरीब मेरे खुलाफ़ा होंगे, फिर उमारा होंगे फिर मुलूक होंगे, फिर जबाबेरह (यानी ज़ालिम बादशाह होंगे) फिर मेरे अहले बैत से एक शख्स ज़हूर करेगा जो ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से भर देगा जिस तरह वह जुल्म व जौर से भरी होगी।[२७][२७]

दज्जाल के मअना

सलमा की अक़दुद दुरर में अबी अब्बास अहमद इब्ने यहिया इब्ने तग़लिब से इस तरह बयान किया गया अबुल अब्बास बयान करता है दज्जाल का नाम उसके धोके और फ़रेबकारी की वजह से है। मसलन

و جلت العبير اذا طلبه بالفطران

यानी जब ऊंट की मालिश रोगनी माददे से करते हो, उस वक़्त इस जुमले का इस्तेमाल[२८][२८] करते हैं।

इब्ने सबाग़(अलमालिकी) की फ़ुसुलुल मुहिम्मा में अबी जाफ़र से रिवायत की जिसमें आपने फ़रमाया: जिस वक़्त ज़हूर करेगें कूफ़े की जानिब रवाना होगें वहाँ मसाजिद को वसीअ और रास्तों में निकले हुए परनालों को बंद कर देगें। कोई बिदअत ऐसी होगी मगर आप उसका क़िला क़मअ फ़रमायेगें और कोई भी सुन्नत ऐसी बाक़ी न रह जायेगी मगर उसको कायम फ़रमायेगें, कुस्तुन्तुन्या, चीन और दैलम के पहाड़ों को फ़तह करेगें।[२९][२९]

यनाबीउल मवददत में हाफ़िज़ क़ंदूज़ी(अलहनफ़ी) ने अमीरुल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालिब(अ) से रिवायत की, अमीरुल मोमेनीन फ़रमाते हैं: आँ हज़रत(स) ने फ़रमाया: अफ़ज़ल तरीन इबादत क़शाइश का इन्तेज़ार है।

मुअल्लिफ़े किताब हाफ़िज़ अलक़ंदूज़ी बयान करते हैं हदीस से महदी(अ) के ज़हूर की कशाकश मुराद है।[३०][३०]

महदी का ज़िक्र तमाम किताबों में मौजूद है

सलमा की अक़दुद दुरर में उमर बिन मुक़री की सुनन से और हाफ़िज़ नईम बिन हम्माद ने राहिबों की किताब से इस तरह रिवायत की है, वह बयान करता है: मैंने महदी का तज़क़िरा अम्बिया की कुतुब में देखा है, आपके हुक़म में किसी किस्म का जुल्म और तशदुद नहीं है।)[३१][३१]

सुकून व इतमीनान:

अक़दुद दुरर में हरस बिन मुगीरा नज़री से रिवायत की गयी वह बयान करता है मैंने अबी अब्दिल्ला बिन अली से अज़ की आक्रा ए महदी को किस तरह से पहचाना जायेगा? हज़रत ने फ़रमाया:

بالسكينة والوقار

सुकून और इतमीनाने नफ़स के ज़रीये पहचाना जायेगा।[३२][३२]

अक़दुद दुरर में ताऊस की सनद से इस तरह रिवायत की गयी: महदी (अ) मज़दूरों की सख्त निगरानी करेंगे, माल की सखावत फ़रमायेंगे और मिसकीनों पर रहम करेंगे।

अक़दुद दुरर में नईम बिन हम्माद के वास्ते से अबी रुमीयतः से इस तरह रिवायत की गयी अबी रुमीयतः बयान करता है कि महदी(अ) मिसकीनों को अमवाल का बेहतरीन हिस्सा अता करेंगे। [३३][३३]

अक़दुद दुरर में हुसैन बिन अली की सनद से इस तरह रिवायत की गयी जिस वक़्त इमाम महदी (अ) ज़हूर फ़रमायेंगे उस वक़्त आपके और अरब व कुरैश के दरमियान सिर्फ़ तलवार होगी, और उन लोगों को आपके ज़हूर की जल्दी न होगी।(खुदा बेहतर जानता है)

आपका लिबास बहुत सादा और खाना जो पर मुन्हसिर और जहा कहीं आप मौजूद होंगे मौत आपकी तलवार के साये में होगी।[३४][३४]

यहूदीयत फ़ना हो जायेगी

अक़दुद दुरर में सुलेमान बिन ईसा की सनद से इस तरह रिवायत की गयी सुलेमान बिन ईसा बयान करता है मुझ से लोगों ने बयान किया कि महदी(अ) के हाथों पर बुहैरा ए तीबरीत से ताबूते सकीना ज़ाहिर होगा। आप उसको बुलंद फ़रमा कर बैतुल मुक़द्दस के सामने रख देंगे। यह देख कर यहूदी आप पर ईमान ले आयेगें।

अक़दुद दुरर में इस तरह वारिद हुआ है कि बअज़ रिवायात में बयान किया गया है कि आपका नाम(महदी) इस वजह से करार पाया कि आप तौरैत की जानिब हिदायत फ़रमायेगें और उसको मुल्के शाम के पहाड़ो पर बरामद फ़रमायेगें। और यहूदीयों की उसकी जानिब हिदायत करेगें। चुनाँचे उस वक़्त यहूदीयों की एक बड़ी जमाअत इस्लाम क़बूल कर लेगी।

और मदाएनी अपनी किताब सुनन में बयान किया है कि आपकी नाम महदी इस सबब से करार पाया कि आप मुल्के शाम की पहाड़ीयों की जानिब लोगों को हिदायत फ़रमायेगें ताकि उससे अहले तौरैत को निकाला जाये तो जिसके ज़रीये आप यहूदीयों पर इतमामे हुज्जत तमाम फ़रमायेगें, चुनाँचे आप के ज़रीये बहुत से यहूदी इस्लाम क़बूल करेगें।

सबान असअफ़ुर रागेबीन में इस तरह बयान करता है कि महदी(अ) इनताकिया के गार से ताबूते सकीना और तौरैत की किताबें मुल्के शाम के पहाड़ों से निकालेंगे जिसके ज़रीये यहूदीयों पर इतमामे हुज्जत फ़रमायेगें, जिनमें से बहुत से यहूदी इस्लाम क़बूल करेगें।

दुनिया में मसीहीयत बाक़ी न रहेगी

यनाबीउल मवद्दत में हाफ़िज़ कंदूजी अबू हुरैरा से रिवायत करते हैं, वह बयान करता है रसूलल्लाह(स) ने फ़रमाया:

وَاللّٰهُ لَيَنْزِلَنَّ بِمَرْيَمَ حَكْمًا عَادِلًا فَلْيَكْسِرَنَّ الصَّلِيبَ وَ لِيَقْتُلَنَّ الْخَنزِيرَ وَ لِيَصْعَنَ الْجِزْيَةَ وَ لِيَتْرُكَنَّ الْفِلَاسَ فَلَا سَعْيَ إِلَيْهَا وَ لَتَذْهَبَنَّ الشُّحْنَاءُ وَ تَلْتَبَاغِضَ وَ التَّحْسَدُ

तर्जुमा व हाशिया: ऐन मुमकिन है कि हदीसे मज़कूरा का तर्जुमा इस तरह हो कि ईसा बिन मरियम नाज़िल होंगे। (इसलिये कि हज़रत ईसा की जानिब मंसूब शुदा शरीयत के ज़वाल के बयान में हदीस मज़कूर वारिद है।)

(फ़्लिक्सरन الصليب) ईसा(अ) सलीब को तोड़ डालेंगे इस तरह ईसाईयों पर सलीब का बेबुनियाद होना साबित हो जायेगा। और खिन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे। इसलिये कि

खिन्ज़ीर इस्लाम में हराम है। और मसीही उसी वक़्त इस्लाम क़बूल करे लेंगे और उस रोज़ के बाद खिन्ज़ीर का इस्तेमाल नही होगा। इस लिये कि यहूद व नसारा में से कोई भी अपने दीन पर बाक़ी न रहेगा। कनीसा से नाच गाने का सिलसिला ख़त्म हो जायेगा और कोई भी उसकी जानिब मुतवज्जे न होगा और कोई शख्स किसी दूसरे से बुज़ व हसद नही करेगा इसलिये कि उस वक़्त तमाम दुनिया(ईमान के) एक ही रास्ते पर गामज़न होगी। जैसा कि कुरआने मजीद में खुदा वंदे आलम ने इरशाद फ़रमाया:

ليظهره على الدين كله

सलमा शाफ़ेई की अक़दुद दुरर में अली बिन अबीतालिब(अ) की सनद से इस तरह रिवायत की गयी हज़रत ने इरशाद फ़रमाया: महदी(अ) तमाम मुल्कों में अपने अहकाम रवाना फ़रमायेंगे। जो लोगों के दरमियान अदल व इंसाफ़ करेंगे। आपके दौरे हुकुमत में बकरी और भेड़िया एक चरागाह में खायेंगे, बच्चे साँप और बिच्छू से खेलेंगे जिनसे ज़रा भी नुक़सान न होगा। एक मुद बोया जायेगा और सात मुद पैदावार होगी।

ज़नाकारी, शराबखोरी और सूदखोरी ख़त्म हो जायेगी। लोगों का रुजहान शरीअत, दीन, इबादात, तवाफ़ व जमाअत की तरफ़ होगा। और लोग बहुत ज़्यादा उमरे

बजा लायेंगे। अमानतदारी का हक अदा करेंगे। दरख्तों के भलों में इज़ाफ़ा और बरकतो की ज़्यादाती होगी। बुरे लोग ख़त्म हो जायेंगे और नेकूकार बाक़ी रहेंगे।

इस मक़ाम पर मुनासिब है कि गुज़श्ता जुमलों की किसी हद तक वज़ाहत कर दी जाये ।

रिवायत में वारिद हुआ है कि हज़रत के ज़माने में भेड़िये और बकरी एक मक़ाम पर चरेगें, हाँलाकि कि बकरी की तबीयत में भेड़िये से ख़ौफ़ खाना है। और भेड़िये की तबीयत में बकरी को फाड़ खाना है, चुनाँचे न तो भेड़िया ही बकरी के साथ रह सकता है और न ही बकरी ही भेड़िये के साथ रह सकती है। क़ाबिले गौर अम्र यह है कि हज़रत महदी(अ) के ज़माने में भेड़िया और बकरी किस तरह से साथ रह सकते हैं?

इसके दो जवाब हैं:

पहला जवाब

भेड़िये का फाड़ खाना उसकी असली फ़ितरत नहीं है बल्कि आरेज़ी है, जो भूक के सबब या भूक की तवील मुद्दत हो जाने से उस पर आरिज़ होता है और जब उसकी हिर्स व तमअ में इज़ाफ़ा होता है वह फाड़ खाने पर आम़ादा हो जाता है।

और भेड़िये के मुकाबले में बकरी का खौफ भी उसके गरीज़ा ए असली के सबब नहीं है बल्कि वह उसकी साबेका मारेफ़त और तजरिबे के सबब उससे खौफ़ करती है।

चुँकि इमाम महदी(अ) के ज़माने में आसमान और ज़मीन की बरकतें बख़ूबी मयस्सर होगी इस लिये न तो भेड़िया भूका होगा और न बकरी।

दूसरा जवाब

यह अम्र खुदा वंदे आलम के मोजेज़ात से होगा, जिस तरह वह मोजेज़ात अंबीया व अवलिया के बारे में होते रहते हैं।

और यह भी मुमकिन है कि महदी की पाकीज़ा सीरत और आपके ज़माने के लोगों का पाकीज़ा किरदार इस हद तक मोवस्सिर हो कि हैवानात और दरिन्दे भी एक दूसरे पर जुल्म करने से बाज़ आ जायें जैसा कि जदीद ऊलूम ने इस अम्र का इंकेशाफ़ किया है। इसके अलावा दीगर एहतेमालात का भी इमकान है।

मज़कूरा वुजुहात की रौशनी में रिवायत में वारिद दूसरा जुमला यह कि महदी(अ) के ज़माना ए इमामत में बच्चे साँप और बिच्छुओ से खेलेगें। बख़ूबी समझा जा सकता है।

यानी एक मुद बोया जायेगा और सात सौ मुद उगेगा। रिवायत में वारिद शुदा जुमला दर हकीकत कुरआने करीम की इस आयत की जानिब इशारा है:

तर्जमा: जो लोग अपने मालों को खुदा की राह में सर्फ करते हैं, उनके सर्फ किये हुए मालों की मिसाल उस दाने की सी है जिसने सात बालीयाँ उगाई हों(और) हर बाली में से सौ(सौ) दाने हों और अल्लाह जिसे चाहता है(इसी तरह की ज़्यादती अता फ़रमाता है।)

सूर: ए बकर:

महदी(अ) के ज़माने में इस क़दर पैदावार होने का सबब बिल्कुल ज़ाहिर है वह यह कि आसमान से मुसलसल बारिश होगी और ज़मीन अपनी तमामतर बरकतों तो ज़ाहिर कर देगी उस वक़्त हर एक किलो ज़राअत करने पर उसकी नतीजा सात सौ किलो पैदावार होना यक़ीनी है।

सवाल: इस तरह की पैदावार क्यो कर मुमकिन है?

जवाब: आज तक किसी वक़्त और किसी भी मक़ाम पर यह अम्र साबित नहीं हुआ है कि हर दाने से सात बालीयाँ निकली हों। और हर बाली में सौ दाने हों।

पस यह खबर कुरआने हकीम ने किस ज़माने से मुतअल्लिक दी है?

क्या कुरआने मजीद ने किसी ऐसे अम्र की खबर दी है जो कभी वुजूद में न आयेगा?

क्या कुरआने मजीद कोई ऐसी मिसाल भी पेश करता है जिसकी कोई वाक़ेईयत और हकीकत न हो। हरगिज़ हरगिज़ नहीं।

पस साबेक़ा मिसाल कब सादिक़ आयेगी?

कुरआने हकीम की साबेक़ा मिसाल महदी(अ) के ज़माना ए इमामत में पूरी होगी।

तूलुल आमार

महदी(अ) के ज़माने में लोगों की उमरें तवील होंगीं।

सवाल:

उमरें किस लिये तूलानी होंगीं?

जवाब:

इसलिये कि कोताह उम्र के असबाब:

- 1- हिफ़ज़ाने सेहत का फ़िक़दान
- 2- रंज व ग़म, नफ़सीयाती बीमारीयाँ वग़ैरह हैं।

और जदीद इल्मे तिब ने इस अम्र की वज़ाहतकर दी है कि इंसानी मशीनरी के लिये अगर ऐसे हालात पेश न आयें जो उसको सुस्ती और काहिली की तरफ़

मायल करते हैं तो इंसान के एक तवील मुद्दत तक ज़िन्दा रहने में कोई अम्र मानेअ नही है।

पस जब इमाम महदी के ज़माने में दुनिया और ईमान की नेमतें आम होगी, उसूले हिफ़ज़ाने सेहत पर अमल होगा और लोगों की ज़िन्दगी सुकून व इतमीनान से गुज़रेगी तो लोग कोताही ए उम्र के अमराज़ में मुब्तला न होंगे।

अमानतों की अदाएगी

हज़रत के ज़माने अमानतों की अदाएगी होगी:

हदीस में वारिद हुआ है कि लोग अपने बादशाह के दीन पर होंगे।

पस जब उम्मत का इमाम, महदी अलकायम (अ) मुजस्समा ए ईमान हो, फ़लाह व बहबूदी की बुनियाद हो, ऐसे इमाम के ज़माने में लोगों को नेक और सालेह होना ही चाहिये। चुनाँचे ऐसे लोग अमानत में ख़यानत हरगिज़ न करेंगे। और अमानतदारी और उसकी अदाएगी लोगों के दरमियान आम होगी।

शरीर हलाक होंगे

शरीर लोग हलाक हो जायेंगे

शरीर लोगों की दो किस्में हैं:

1- वह लोग हैं जिनको किसी तरह की खैर व खूबी और नसीहत से फ़ायदा न होगा। चूँकि यह लोग फ़साद और शक़ावत के मर्कज़ होंगे। लिहाज़ा ऐसे लोगों को इमाम क़त्ल फ़रमा देंगे।

2- दुसरे वह लोग हैं जिन पर नेक माहौल और ईमानी फ़ज़ा का असर होगा। चुनाँचे महदी(अ) के ज़माना ए इमामत में सालेह और मोमिन बंदे हो जायेंगे।

इमाम के परचम के नीचे कोई भी दुश्मन बाक़ी नहीं रहेगा।

(इमाम(अ) के परचम तले अहले बैत(अ) का कोई भी दुश्मन बाक़ी न रहेगा।)

दुश्मनाने अहले बैत की दो किस्में हैं:

1- यह वह लोग हैं जो अहले बैत के हक़ और आपके फ़ज़ल से जाहिल हैं। ऐसे लोग महदी(अ) के ज़माना ए इमामत में अहले बैत के फ़ज़ल और हक़ से बखूबी वाक़िफ़ हो जायेंगे। और आपकी विलायत से दोस्ती और मुहब्बत करेंगे।

2- यह लोग ऐसे दुश्मनाने अहले बैत हैं जिनके लिये अमीरुल मोमीनीन हज़रत अली (अ) ने इस तरह से फ़रमाया:

तर्जुमा: यकीनन कुछ हमारे दुश्मन ऐसे भी हैं जिनको हम पाक व पाकीज़ा शहद भी खिलाएंगें फिर भी उनकी दुश्मनी में इज़ाफ़ा होता रहेगा।

यही वह लोग हैं जिनके वुजूद से ज़मीन को पाक करने के लिये इमाम महदी (अ) उनको क़त्ल करेगें। चुनाँचे इस तरह के दुश्मनाने अहले बैत के वुजूद से दुनिया ख़ाली हो जायेगी।

मज़क़ूरा नुकात के तहत बहल बहुत तूलानी है और उससे मुतअल्लिक़ बहुत सी मिसालें मौजूद हैं। लेकिन हम इख़्तसार के पेशे नज़र कलाम को तूल देना नहीं चाहते।

और नेकी करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ। और ख़ुदा की राह में जो जिहाद करने का हक़ है उस तरह जिहाद करो, वही है जिसने तुमको अपने दीन की पैरवी के लिए मुन्तख़ब किया। और दीन के (मुआमलात में) तुम पर किसी तरह की तंगी (सख़्ती) रवा नहीं रखी, तुम अपने बाप इब्राहीम की मिल्लत पर (हमेशा कारबंद) उसने तुम्हारा नाम (लक़ब) मुसलमान रखा (उन किताबों में जो कुरआन से) पहले ही (नाज़िल हो चुकी हैं) और (ख़ुद) इस कुरआन में भी ताकि (हमारा) रसूल तुम्हारे (आमाल व अफ़आल) पर गवाही दे और तुम (दूसरे) लोगों के

(आमाल व अफ़आल) पर गवाही दो तो (देखो) तुम लोग पाबंदी से नमाज़ पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और खुदा (के दीन) से मज़बूती के साथ मुतमस्सिक रहो वही तुम्हारा सरपरस्त है, वह कैसा अच्छा सरपरस्त और कैसा अच्छा मददगार है।

[2]-यनाबी उल मवद्दत, हाफ़िज़ अलक़न्दूज़ी

[3]-मुस्नदे अहमद बिन हम्बल

[4]-सहीहे तिरमीज़ी

[5]-हदीस शरीफ़ में मेहदी की तशबीह ताऊस (मोर) से देना ख़ूबसूरती और हुस्न व जमाल के सबब हो सकती है। जिस तरह मोर का हुस्न व जमाल ज़मीन के परिंदों के दरमियान बेनज़ीर है, उसी तरह इमाम मेहदी का जमाल भी अहले जन्नत के दरमियान बेमिसाल है। (मोअल्लिफ़)

[6]-कुफ़्र के तीन दर्जे हैं: १- खुदावंदे आलम की ज़ाते गिरामी का इंकार करना। २- खुदावंदे आलम की नाज़िल शुदा चीज़ों का इंकार करना। ३- नेमते खुदावंदी का इंकार करना। हदीसे मज़कूरा में इसी कुफ़्र का बयान किया गया है। इस लिए इमाम मेहदी (अ.) को खुदा ने हक़ करार दिया है। मेहदी (अ.) का इंकार करना

रसूलल्लाह (स) के इंकार के मुतारादिफ़ है। इसलिए कि मेहदी (अ) के ज़हूर की खबर हज़रत (स.) ने दी है। (मुअल्लिफ़)

[7]- रिवायत में दैलम के पहाड़ से मुराद वह मक़ाम है जहाँ पर रसूलल्लाह (स) के ज़माने में यहूदीयों का मर्कज़ था और कुस्तुन्तुनया नसारा का मर्कज़ था और बमुल्के जबलुद दैलम व कुस्तुन्तुनया से इमाम मेहदी (अ) का तमाम दुनिया और दीगर मज़ाहिब पर कामयाबी मुराद है। (मुअल्लिफ़)

[8]- सूरह मुजादिला आयत २२

[9]- ग़ैबत की दो किसमें:

ग़ैबते सुगरा: उसकी जमाना कायम के वालिद इमाम हसन असकरी की वफ़ात (260 हिजरी) से शुरु होकर आपके चौथे नायब की वफ़ात(३२९हिजरी) पर ख़त्म हुआ।

ग़ैबते कुबरा: इस ग़ैबत का ज़माना ३२९ हिजरी से शुरु हुआ जो आज तक जारी है। ख़ुदावंदे आलम हज़रत के ज़हूर में ताजील फ़रमाये और हमें हकीक़ी मारेफ़त की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए।

[10]-1- रिवायत में बयान किया गया है कि आपके जाए क़याम पर कोई शख्स भी मुत्तला न होगा मज़क़ूरा इतेला से आपकी सुकुनत की मुस्तक़िल जगह मुराद है।

2- दूसरी रिवायत यह बयान की गयी है कि आपकी जगह और सुकुनत की इल्म आपके गुनाम को होगा। यहाँ पर आप का वह ख़िदमतगुज़ार मुराद है जो खुद भी अवलिया ए ख़ुदा से होगा व गर ना एक या चंद मर्तबा मुतअद्दिद मक़ामात पर बहुत से साहिलीन और मुत्तकीन हज़रात को आपकी मुलाक़ात का शरफ़ हासिल हुआ। जिसमें किसा किस्म का भी शक नही किया जा सकता और यही वह मक़ाम है जहाँ हर दो रिवायात की जमा किया जा सकता है।

1- बाज़ रिवायात यह कहती है कि जो शख्स भी इमाम से मुलाक़ात का दावा करे उसकी तकज़ीब करो।

2- और बाज़ रिवायात से यह भी मालूम होता है कि मुखलिस और सालेह मोमीनीन हज़रात से मुलाक़ात का शरफ़ हासिल करने में कामयाब हुए हैं। उनमें से चंद यह हैं: सैय्यद बहरूल उलूम, मुक़द्द्स अरदबेली, शेख अंसारी, हाज अली बग़दादी। इनके अलावा वह हज़रात जिनका तज़क़िरा अलहाज मिर्ज़ा हुसैन नूरी ने अपना किताब नजमुस्साक़िब में और शेख महमूद इराकी ने अपनी किताब दारुस सलाम में और अल्लामा मजलिसी ने बेहारूल अनवार में और बकीया हज़रात ने

भी अपनी अपनी कुतुब में किया है। खुदावंदे आलम हमें भी इसकी तौफ़ीक़ दे।(मुअल्लिफ़)

[11]- इस मक़ाम पर इमाम जाफ़र सादिक़(अ) ने एक लतीफ़ मिसाल बयान फ़रमाई है। आफ़ताब से हयात मोजूदा के तमाम फ़वाएद मुतअल्लिक़ हैं। अगरचे वह बादलों के अंदर ही पोशीदा हो, अलबत्ता लोह आफ़ताब की धूप से महरूम रहते हैं, इसी तरह इमाम मेहदी(अ) के वुजूद से एक अज़ीम फ़ायदा उनकी ग़ैबत में होते हुए भी लोगों को पहुँच रहा है। जो कायमात की हिफ़ाज़त है। चुनाँचे आपके सदक़े में तमाम दुनिया तबाह व बर्बाद होने से महफ़ूज़ है अलबत्ता आपकी ग़ैबत से सबब लोग फ़वायद से महरूम हैं।(मुअल्लिफ़)

[12]- सूरह अनफ़ाल आयत ३९

[13]- सूरह आले इमरान आयत ८३

[14]- यानी मोमीनीन की एक जमाअत इस्लाम की नश्र व इशाअत दीन की तबलीग़ करेगी। नेकीयों का हुक्म देगी और बुराईयों से मना करेगी। शहरों को दीन और ईमान से भरे देगी। यह तमाम बातें इमाम के ज़हूर का मुकद्दमा हैं। हदीसे मज़क़ूर और इसी किस्म की साबेक़ा अहादीस से उन लोगों को बख़ूबी जवाब दिया जा सकता है जो यह कहते हैं कि कुफ़्र व गुमराही को हतमी तौर पर मुन्तशिर

होना चाहिये ताकि इमाम के ज़हूर में ताजील हो हालाँ कि यह उनका कौल बगैर दलील के है। इसलिये हदीस में कुफ़्र व ज़लालत का ज़िक्र नहीं है बल्कि जुल्म व जौर के बारे में कहा गया है।

और जुल्म व जौर में वह गुनाह भी शामिल है जो इंसान खुद से बजा लाते हैं। और ऐसे गुनाह पर भी जुल्म व जौर सादिक आता है जो एक शख्स दूसरे पर करता है।

लिहाज़ा हदीस शरीफ़ के ज़ाहिरी मफ़हूम से यह नहीं मालूम होता है कि शहरों में कुफ़्र व इलहाद का फैलना ज़रूरी व लाज़मी हो। और न ही हदीसे शरीफ़ का मफ़ाद यह है कि अम्र बिलमारूफ़ और नहयी अनिल मुन्कर को तर्क किया जाये।(मुअल्लिफ़)

[15]- सूरह युसुफ़ आयत ११०

[16]-सूरह जुखरुफ़ आयत ६१

[17]- बैअत बैअ के मानी में है जिसके मायना फ़रोख़्त करने के हैं, बैअत को बैअत इसलिये कहा गया है कि बैअत करने वाला अपने नफ़्स और जान को फ़रोख़्त करता है और जंग व सुल्ह और क़ज़ा के लिये और हर एक हुक्म और नबी के लिये हर वक़्त आमादा रहता है। इमाम मेहदी के परचम पर البيعة الله यानी बैअत फ़कत अल्लाह के लिये है, इसका मतलब यह है कि मेहदी ख़ुदा की जानिब से उसके नायब हैं। और जिनकी बैअत करना ख़ुदा से बैअत करने के मुतारादिफ़ है और यह बैअक उसी बैअक की ताकीद है जो मोमीनीन की जानिब से कुरआने हकीम में वारिद हुई है। मसलन ख़ुदा वंदे आलम इरशाद फ़रमाता है:

اللّٰهُ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ إِنَّ

ख़ुदा ने ख़रीद लिया है बाज़ मोमीनीन की जान और अमवाल को जन्नत के बदले।

[18]- माहिरे फ़लकीयात के मुताबिक़ नामुमकिनात से हैं कि अक्वले माह में माहताब को गहन लगे इसलिये कि यह अम्र महताब की ख़िलक़त से आज तक वुजूद में नहीं आया और इसी तरह इल्मे फ़लक़ के ऐतबार से नामुमकिन है कि आफ़ताब का गहन महीने के दरमीयान में वाक़े हो, यह अम्र भी आफ़ताब की ख़िलक़त से आज तक वुजूद में नहीं आया और आफ़ताब का मगरिब से तुलू

करना भी नामुमकिनात में से है, इस तरह निज़ामे शम्सी में खलल वाक़े होगा। और यह भी नामुमकिन है, लेकिन जो खुदा हर चीज़ पर कादिर है उन तमाम उमूर को अपने वली(मेहदी) के ज़हूर के वक़्त अंजाम देगा।

चाँद और सूरज के गहन की खबर मौजूदा रिवायत से मज़कूर हुई और आफ़ताब के मगरिब से तुलू होने से मुतअल्लिक भी बाज़ रिवायत में वारिद हुआ है।

[19]- रिवायत में एक जुमला वारिद हुआ है इस जुमले का इस्तेमाल उस शख्स के लिये होता है जो अपनी घर नहीं छोड़ता और यह यहाँ पर इस अम्र से किनाया इस्तेमाल किया गया है कि लोग उन हालात मज़कूरा में दूसरे मज़हब की तरफ़ न जायें, इसके माना यह हरगिज़ नहीं हैं कि लोग अम्र बिल मारुफ़ और नहयी अज़मुन्कर को तर्क कर दें इसलिये कि यह दोनो अम्र वाजिब हैं और उनके तर्क करने से वाजिबात मुअत्तल हो जायेंगे।

अलबता मेरा खयाल यह है कि हदीसे मज़कूर में इस जुमले के माना एक दूसरी हदीस में इस तरह मौजूद हैं लोगों के साथ रहो लेकिन उनमें घुल मिल न जाओ) हदीस का मतलब यह है कि लोगों के दरमीयान अम्र बिल मारुफ़ अंजाम दे सकते

हो उस वक़्त तक उनके साथ रहो ताकि इनके अच्छाई का हुक्म दो और बुरी बातों से रोको।

[20]- सूरह काफ़ आयत ४१-४२

[21]- हदीस में ज़िक्र शुदा मायनी यानी एक ही आवाज़ का तमाम लोगों को सुनना और समझना। ग़ैब पर ईमान रखने वालों के लिये बहुत ज़्यादा सकील है हालाँकि खुदा वंदे आलम की कुदरते आम्मा से मुतअल्लिक हैं। और आज का दुनिया और माहौल में चीज़ बहुत आसान हो चुकी है कि इंसान ने जब एक ऐसी मशीन ईजाद की जिसको मुख्तलिफ़ मुमालिक में आम मजालिस में इस्तेमाल किया जाता है जिनमें मुख्तलिफ़ ज़बानों से तअल्लुक रखने वाले लोह मौजूद होते हैं। कलाम करने वाला अरबी में कलाम करता है लेकिन यह मशीन उसी खिताब का तर्जुमा फ़ारसी, उर्दू, फ़्रांसीसी वगैरह ज़बानों में करती है।

इस्लाम मुजस्समा ए मोजिज़ात है और टेक्नालाँजी चाहे जिस क़दर तरक्की कर जाये लेकिन इस्लाम से निशानीयों और मोजिज़ातत का ज़हूर होता रहेगा।(मुअल्लिफ़)

[22]- हदीसे शरीफ़ में पहला इशारा क़त्ल और हादिसात की जानिब है जो आज की दुनिया में हर रोज़ कहीं न कहीं वाक़े हो रहे हैं। कभी को आलमी जंग और कभी ख़ाना जंगी की सूरत में हमारे सामने हैं जिसकी वजह से लाखों जानें जा रही हैं। हदीस में दूसरा इशारा आम अमवात की जानिब है जो कि वबाई अमराज़ भूक और ज़लज़लों के सबब वाक़े होती हैं।

2- बैदा मदीने और मक्के के दरमीयान एक सहारा है जहाँ पर शदीद तरीन ज़लज़ले आयेगें जिसके सबब शाम से आने वाला सुफ़यानी लश्कर तबाह हो जायेगा जिसकी मज़ीद तफ़सील दूसरी हदीस में बयान की जायेगी।

[23] - रिवायत में नफ़से ज़कीय्या से मुराद सैयदे हुसैनी है जो इमाम के ज़हूर से क़ब्ल ख़ुरुज करेगा। लोगों को हक़ का जानिब दावत देगा और इमाम के ज़हूर से क़ब्ल शहीद कर दिया जायेगा। (मुअल्लिफ़)

[24] - यह अम्र तअज्जुब खेज़ नही है इसलिये कि ख़ुद कुरआने करीम ने जनाबे सुलैमान के वसी आसिफ़ बिन बरख़िया के लिये हज़ारों मील की मसाफ़त वाली ज़मीन की तनाबें सिमट गयीं थीं, और उन्होने एक लम्हे के अंदर फ़लस्तीन से यमन में तख़्ते बिलक़ीस मंगवा लिया था। इरशाद होता है:

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رآهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ

(सूरह नमल आयत ४०)

[25] - हदीसे मज़कूर में मशरिक व मगरिब वालों के जमा होने का मतलब यह है कि तमाम आलम यह देखेगा कि इमाम सारी दुनिया से जुल्म व जौर का बदला ले रहे हैं और जब तमाम दुनिया पर यह रौशन और वाज़ेह हो जायेगा कि निजात आपके दामन से वाबस्ता है और उस वक़्त सारे लोग आप पर ईमान ले आयेगें।

हदीस में रोफ़का ए इमाम से मुमकिन है आपके दरजा ए अक्वल के अंसार मुराद हों और इसी सबब से उन हज़रात को आपके रोफ़का का नाम दिया गया हो।

अबदाल: लफ़्जे अबदाल ऐसे मुत्कीन और सालेहीन लोगों से किनाया है जब भी उनमें से कोई ग़ायब होता है या इन्तेक़ाल करता है खुदावंदे आलम उसका बदल दूसरे से शख्स को करार देता है।

रिवायत में शाम जो वारिद हुआ है उससे मुराद मौजूदा शाम नहीं है बल्कि वह मुल्के शाम है जो सिरिया, लेबनान, फ़लिस्तीन, जार्डन और तर्की के बअज़ हिस्सों पर मुशतमिल है और यह भी मुमकिन है कि अबदाल(जबले आमिल) कि जहाँ पर सदरे इस्लाम से आज तक हक़ की हिमायत की जा रही है और हज़ारों ऊलामा, फ़ोकाहा और मुत्कीन वहाँ पर पैदा हुए हैं यहाँ तक कि ऊलामा ए जबल आमिल की बअज़ शख़सियात के बारे में खास कुतुब भी तहरीर फ़रमाई गयी है। जिनमें से बुजुर्ग आलिमे दीन शेख मुहम्मद अलहुर्र अलआमिली की किताब(अमलुल अमल फ़ी ऊलामा ए जबलिल आमिल) है, यही ऊलामा मुराद हैं।(मुअल्लिफ़)

[26] - हदीसे मज़क़ुरा इस अम्र पर दलालत करती है कि इमाम मेहदी(अ) के ज़हूर तक खुदा की तरफ़ दावत और दुनिया में हक़ पर जंग जारी रहेगी। औक यही हदीस उस गिरोहे मुसब्बीन के लिये जबाव भी है जिनका कहना है कि दुनिया का कुफ़्र व ज़लालत से भर जाना ज़रूरी है ताकि इमाम ज़हूर फ़रमायें और हमें कुछ इसलाह नहीं करना चाहिये व गर्ना अमल इमाम के ज़हूर में ताख़ीर का बाईस होगा। इस किस्म का ख़्याल कायम करना कई वुजूह से ग़लत है, जिनमे से बअज़ का ज़िक्र हम कर चुके हैं।(मुअल्लिफ़)

[27] - इमाम मेहदी (अ) के ज़हूर से कब्ल चार किस्म के लोग हुकुमत करेंगे:

- 1.खुलाफा- यह लोग पैगम्बरे इस्लाम(स) की खिलाफत के मुद्दई हैं।
- 2.उमारा- यह लोग खिलाफत के मुद्दई नहीं होंगे, अलबत्ता लोगों की इसलाह के लिये अमारत (यानी हुकुमत) के मुद्दई होंगे।
3. मुलूक- यह लोग न तो खिलाफत का दावा करेंगे और न अमारत का, अलबत्ता गुलामों और अमवाल पर हुकुमत करेंगे।
4. जबाबेरह- यह लोग जुल्म व जौर के अलावा और कुछ अंजाम न देंगे।
मज़कूरा तमाम हुकुमतों के बाद इमाम मेहदी(अ) हक़ और खैर व सलामती के साथ ज़ाहिर हो कर हुकुमत फ़रमायेंगे।(मुअल्लिफ़)

[28] - दजल: हर उस चीड़ को कहते हैं जो झूट और बेहकीकत हो, मसलन इस्तेमाल किया जाता है दजलुस सैफ़ यानी तलवार पर इस तरह जंग चढ़ जाना कि वह लोगों को फ़ौलाद नज़र न आये या बेहतरीन क्रिस्म का लोहा महसूस हो इसी तरह दज्जाल उस शख्स को कहते हैं जिससे झूट और फ़रेबकारी के अलावा और कुछ ज़ाहिर न हो।(मुअल्लिफ़)

[29] - जिस हुकुमत की तासीस इमाम मेहदी(अ) फ़रमायेंगे वह तहज़ीब व तमददुन के ऐतबार से आला तरीन हुकुमत होगी। तमददुन की मुतअद्दिद अनवाए हैं। मसलन इमाम मसाजिद में वुसएत फ़रमायेंगे, ताकि तमाम दुनिया परचमे

इस्लाम व ईमान के तहत दाखिल हो जाये। मसलन रास्तों में निकले हुए परनालों को बंद करेगें ताकि गुज़रने वालों को किसी किस्म की ज़हमत न हो, और वसाइल के नक़ल में किसी किस्म की दुशवारी पेश न आये, शहरों को हुस्न व जमाल बख़्शेगें। कुस्तुन्तुन्या(जो कि ईसाईयों का मर्कज़ है।) उसको फ़तह फ़रमायेगें। चीन, बौध और कुफ़ व इलहाद का मर्कज़ है उसको भी फ़तह फ़रमायेगें। दैलम, यहूदीयों और उन जैसे दूसरे दीगर लोगों का मर्कज़ है इसी तरह उसको भी आप ही फ़तह फ़रमायेगें। इस तरह तमाम दुनिया फ़िकरी, अमली, सियासी और अखलाकी तरक्कीयों के साथ मेहदी(अ) के परचम तले जमा हो जायेगें।(मुअल्लिफ़)

[30] - मेहदी(अ) के जुहूर के सबब इसलाह का इंतेज़ार करने में रुहानी और अमली दो बड़े फ़ायदे हैं।

रुहानी फ़ायदा: रुही फ़ायदा इस तरह है जब हम मेहदी का इंतेज़ार करेगें तो उनसे मुहब्बत व मुरव्वत में इज़ाफ़ा होगा। जो मुहब्बत खुदा वंदे आलम की जानिब से इमाम की निस्बत लोगों पर वाजिब करार दी गयी है। (ऐ रसूल(उन लोगों से) कह दो कि मैं तुम से अपनी तबलीगें रिसालत की उजरत अपने अहले बैत की मवद्दत के अलावा कुछ नहीं चाहता।) इसी तरह उसके अलावा दीगर रुहानी फ़वाइद भी मुज़मर हैं।

अमली फ़ायदा:

[31] - असफ़ार, सफ़र की जमा है, जिसके मायना बड़ी किताब के हैं। यानी मेहदी का ज़िक्र अंबीया पर नाजिल शुदा कुतुब में मौजूद है।

कलमा ए(असफ़ारुल अंबीया) के मायना हैं कि रिवायत में तमाम अंबीया की कुतुब मुराद हैं, इसलिये कि मज़कूरा कलमा जमा है और मुज़ाफ़ भी है जो उमूम का फ़ायदा देता है, जैसा कि इल्मे अदब में मौजूद है।

(मुअल्लिफ़)

[32] - سکينة के मायना इतमीनाने क़लबी और बातेनी सुकून के हैं।

الوقار ज़ाहिरी इतमीनान को कहते हैं जिसका इज़हार आज़ा के ज़रीये होता है, यानी इमाम मेहदी का क़ल्ब सुकून और इतमीनान से भरा होगा और आज़ा व जवारेह से जलालत व वकार का इज़हार हो रहा होगा। चुनाँचे आप खुदा वंदे आलम के हुज़ूर में खुज़ू व खुशू की हालत में होंगे और मज़कूरा तमाम हालात ईमान के ताबे हैं।(मुअल्लिफ़)

[33] - तमाम दुनिया में जहाँ कहीं मसावात का नारा बुलंद किया जाता है वहाँ पर दौलतमंदों को फ़कीर बनाने की कोशिश और उनसे फ़ुकरा के नाम पर माल

हासिल किया जाता है(लेकिन उनके दरमीयान सही तकसीम नहीं हुई। आज की दुनिया में फ़कीरी पर मसावात कायम का जाती है लेकिन इमाम मालदार के सबब मसावात फ़रमायेगें और मिसकीन को माल का बेहतरीन हिस्सा अता करेगें। पस तुम आसमानी निज़ाम और इंसानी निज़ाम पर ग़ौर करो कि दोनो में कितना फ़र्क है।)

(मुअल्लिफ़)

[34] - मेहदी (अ) और अरब व कुरैश के दरमीयान तलवार और जंग का मतलब यह है कि अरब के बअज़ लोग तकब्बुर के सबब आपसे मुकाबला करेगें, क़िताल करेगें और आप भी क़िताल करेगें । मेहदी (अ) की ग़ेज़ा अपने बकीया अजदाद की मानिन्द जौ की रोटी होगी। और आपको मौत का ज़रा भी ख़ौफ़ दामनगीर न होगा। लिहाज़ा आपकी तलवार ख़ुदा की राह में बुलंद रहेगी। आप अपने एक हाथ से कुरआन की ततबीक़ और दूसरे हाथ से तलवार लेकर कुरआन की हिफ़ाज़त फ़रमायेगें।

(मुअल्लिफ़)

फेहरीस्त

इमाम महदी अलैहिस्सलाम हदीसे रसूल की रौशनी में.....	1
मुक़द्दमा.....	2
अलकंजी (शाफ़ेई) अबूसईद खिदरी से रिवायत करते हैं.....	6
यनाबी उल मवद्दत.....	12
किताबुल महदी.....	15
मुत्तकी हिन्दी.....	18
नेशापुरी की मुस्तदरक.....	20
जुन्दल बयान करता है.....	25
यनाबीऊल मवद्दत में अली बिन अबी तालिब.....	27
रिफ़ाआ बिन मूसा.....	30
महदी (अ) के अंसार.....	31
महदी(अ.) का परचम.....	34
महदी से हर चीज़ खुश होगी.....	35
अलामते ज़हूर.....	35
इमाम महदी (अ) के ज़हूर.....	42
इमाम का क़िताल हक़ पर होगा।.....	48
असआफ़ुर रागेबीन.....	49
महदी (अ) की हुकूमत पाँचवी होगी.....	52
दज्जाल के मअना.....	53

सुकून व इतमीनान:.....	54
दुनिया में मसीहीयत बाकी न रहेगी.....	57
पस यह खबर कुरआने हकीम ने किस ज़माने से मुतअल्लिक दी है?.....	62
शरीर हलाक होंगे.....	63
फेहरीस्त	81